राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक-पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

ग्रन्थाङ्क ३४

श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती सर्वविद्यानिधान विरचित

कवीन्द्रकल्पलता

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jaipur

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक–पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

ग्रन्थाङ्क ३४

श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती सर्वविद्यानिधान विरचित

कवीन्द्रकल्पलता

प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jaipur

ज य पु र (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान देशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान संपादक

पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[ऑनररि मेंबर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधनप्रतिष्ठान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(ऑनररि डायरेक्टर) – भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ३४

श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती सर्वविद्यानिधान विरचित

कवीन्द्रकल्पलता

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती सर्वविद्यानिधान विरचित

कवीन्द्रकल्पलता

संपादिका

श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत

रावतसर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर

जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१५] भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८० [ख्रिस्ताब्द १९५८

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य रु० २.००

मुद्रक—जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ— १. प्रमाणमञ्जरी–तार्किक चूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६·००। २. यन्त्रराज रचना–महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १·७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्री मधुसूदन ओझा मूल्य १०·७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण मूल्य ३·००। ५. कारकसंबंधोद्योत–पं० रभसनन्दि मूल्य १·७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण मूल्य २·००। ७. शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २·००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ मूल्य १·७५। ९ शृङ्गारहारावलि–हर्ष कवि मूल्य २·७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्यं–पं० लक्ष्मीधर भट्ट मूल्य ३·५०। ११. राजविनोद– कवि उदयराज मू० २·२५। १२. नृत्तसंग्रह मूल्य १·७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुंभा मूल्य ३·७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दर गणि मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पांजलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४·२५। १६. कर्णकुतूहलं तथा कृष्णलीलामृतं–भोलानाथ मूल्य १·५०। १७. ईश्वर विलास महाकाव्य, श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ -१. कान्हडदे प्रवन्ध-कवि पद्मनाभ मूल्य १२·२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास मू० ५·५०। ५. राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग १, मूल्य २·२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल मूल्य १.७५। ७. कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ—१. त्रिपुरा भारती लघुस्तव–लघुपंडित। २ शकुनप्रदीप–लावण्य शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह। ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा, पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाश संकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७. वसन्तविलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. रत्नकोश। ११. चान्द्रव्याकरण। १२. स्वयंभू छंद–स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४. मुग्धावबोध आदि औक्तिक संग्रह। १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद। १७. पद्यमुक्तावली–कवि कृष्ण भट्ट। १८. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट।

राजस्थानी और हिन्दी भाषाग्रन्थ—१. मुंहता नैणसीरी ख्यात–मुंहता नैणसी। २. गोराबादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. राठोड़ वंशरी विगत आदि वार्ताएँ। ४. सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. चन्द्रवंशावली–कवि मोतीराम। ६. राजस्थानी दूहा संग्रह। ७. वीरवांण–ढाढी बादर।

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषा में रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

सञ्चालकीय वक्तव्य

सर्वविद्यानिधान श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती हमारे देश के एक महान् विद्वान हो गये हैं। कवीन्द्राचार्य काशी में पण्डित-मण्डली के प्रमुख थे और आपने काशी में एक पुस्तकालय स्थापित किया था। यह पुस्तकालय तो अब नहीं रहा किन्तु इसका महत्त्व इसके प्राप्त सूचिपत्र से अंकित किया जा सकता है। यह सूचिपत्र बड़ौदा की "गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज" में प्रकाशित भी हो चुका है।

शाहजहां के समय में काशी और प्रयाग के यात्रियों पर कर लगा तो श्रीमद् कवीन्द्राचार्य ही मुगल-दरवार में पहुंचे और कर की आज्ञा रद्द करवाई। इस घटना से सारे भारत में प्रसन्नता का संचार हुआ और विद्वानों ने अपने अभिनन्दन श्रीमद् कवीन्द्राचार्य को भेजे। "कवीन्द्रचन्द्रोदय" के नाम से इन संस्कृत अभिनन्दनों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है और भाषाभिनन्दन-संग्रह बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय में "कवीन्द्रचन्द्रिका" के नाम से सुरक्षित है जिसको प्रकाशित करने का हमारा विचार है।

कवीन्द्राचार्य की एक संस्कृत कृति "कवीन्द्रकल्पद्रुम" इंडिया आफिस लायब्रेरी, लन्दन में है और दूसरी भाषा कृति "कवीन्द्रकल्पलता" राजस्थान में उपलब्ध हुई है। हमने रावतसर, बीकानेर की विदुषी रानी श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत के पास जब इस सरस भाषा कृति की प्रति देखी तो तुरन्त ही प्रकाशन के लिये अपनी अनुमति प्रकट की। मुझे विशेष प्रसन्नता है कि श्रीमती रानी चूण्डावतजी के सौजन्य से अब यह कृति प्रकाशित होकर पाठकों के हाथों में पहुंच रही है।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर, ता० १८ नवम्बर, १९५८ ई०

मुनि जिनविजय
संमान्य सञ्चालक

भूमिका

मुगल सम्राट शाहजहां के राज्यकाल में श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती एक प्रसिद्ध विद्वान् हो गये हैं। शाहजहां ने काशी और प्रयाग के हिन्दु-यात्रियों पर विशेष कर लगाया तो श्री कवीन्द्रचार्य ही साहसपूर्वक मुगल-दरबार में पहुंचे और उसका युक्तिपूर्वक विरोध किया, जिसके फलस्वरूप शाहजहां ने कर-सम्बन्धी आज्ञा रद्ध कर दी। महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री ने इस घटना के विषय में लिखा है कि काशी और प्रयाग में हिन्दू तीर्थ-यात्रियों पर कर लगा तो कवीन्द्राचार्य ने एक बड़े जनसमूह के साथ आगरा की यात्रा की और शाहज़हां के सन्मुख दीवान-ए-आम में पहुंच कर हिन्दु-यात्रियों के पक्ष में अपना वक्तव्य दिया। कवीन्द्राचार्य के जोरदार वक्तव्य से मुगल-दरबार में इराक, इरान, बदख्शां और बलख आदि के सरदार स्तंभित हो गये और शाहजहां तथा दाराशिकोह ने उससे प्रभावित हो यात्रा-कर माफ कर दिया। समस्त भारतवर्ष के हिन्दुओं में इस घटना से प्रसन्नता व्याप्त हो गई। इसी समय कवीन्द्राचार्य सरस्वती को सर्वविद्यानिधान की उपाधि से अलंकृत किया गया[1]।

काशी और प्रयाग के यात्रा-कर की निषेधाज्ञा से प्रभावित होकर देश के कई धर्माचार्यों, विद्वानों और कवियों ने कवीन्द्राचार्य को अपने अभिनन्दन भेजे।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती का इस अवसर पर अभिनन्दन करने वाले ६९ विद्वानों में कुछ व्यक्ति इस प्रकार हैं—

१. श्री कृष्ण उपाध्याय, जिन्होंने "कवीन्द्रचन्द्रोदय" के नाम से संस्कृत अभिनन्दनों का संकलन भी किया।

२. श्री जयराम भट्टाचार्य, न्यायसिद्धान्त-माला, पदार्थमणिमाला न्याय-कुसुमाञ्जली, काव्य प्रकाश आदि के प्रसिद्ध टीकाकर।

३. क्षमानन्द वाजपेयी, न्यायरत्नाकर और सांख्यतत्व विवेचन के प्रसिद्ध लेखक।

४. भैयाभट्ट, धर्मरत्न के लेखक भट्टारकभट्ट के पुत्र।

५. केशव मिश्र, कोट कांगड़ा के नरेश माणिक्यचन्द्र के आश्रित।

६. नागेश-सोमराज पण्डित के पुत्र, संभवत: श्राद्धेन्दुश्वर के लेखक ही हैं।

---

१ देखिये—इंडियन एण्टीक्वेरी, वर्ष १९१२ पृष्ठ ११।

इस यात्रा-कर की निषेधाज्ञा के सम्बन्ध में डॉ० हरदत्त शर्मा का "A Forgotten Event of Shah Jahan's Reign" अर्थात् "शाहजहां के शासनकाल की एक विस्मृत घटना" नामक निबन्ध भी Kuppuswami Commemoration Volume में द्रष्टव्य है।

७. रामकृष्ण नागर संभवतः दामोदर के पुत्र रामकृष्ण दीक्षित ही हैं जिन्होंने बनारस में सन् १६१६ ई० में त्रिस्थलीसेतु की प्रतिलिपि की और कई ग्रन्थों की रचना की।

८. गौरीपति मिश्र, संभवतः श्रीदत्त कृत आचार्यादर्श की टीका के लेखक हैं।

९. बालकृष्ण ज्योतिर्विद—जातक कौस्तुभ, जैमिनी सूत्रभाष्य और ताजिककौस्तुभ आदि के लेखक।

१०. ब्रह्मेन्द्र सरस्वती—देवेन्द्र के शिष्य और वेदान्तपरिभाषा के लेखक।

११. भानुभट्ट—नीलकण्ठ भट्ट के पुत्र और द्वैतनिर्णय सिद्धान्तसंग्रह, होमनिर्णय आदि के लेखक[१]।

"कवीन्द्र-चन्द्रोदय" के नाम से इन अभिनन्दनों का संकलन श्रीकृष्ण उपाध्याय ने किया। एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता और बम्बई के पुस्तकालयों में "कवीन्द्र-चन्द्रोदय" की प्रतियां प्राप्त हुई हैं। इस महत्त्वपूर्ण कृति को पं० हरदत्त शर्मा और एम. एम. पटकर ने सम्पादित कर ओरिएन्टल बुक एजेन्सी पूना की ओरिएन्टल सिरीज में प्रकाशित किया है। "कवीन्द्र-चन्द्रोदय" नामक कृति से काशी और प्रयाग की यात्रा के लिये लगाये गये कर, कवीन्द्राचार्य की बहुमुखी प्रतिभा, विद्वत्ता और प्रशंसनीय साहस का विस्तृत परिचय मिलता है।

मुसलमान इतिहासकारों ने शाहजहां के शासनकाल की यात्रा-कर सम्बन्धी उपरोक्त घटना का कोई वर्णन अपने ग्रंथों में नहीं दिया है, जिसका कारण यही हो सकता है कि एक हिन्दु पण्डित के प्रयास के फलस्वरूप मुगल शासक शाहजहां को अपनी आज्ञा लौटानी पड़ी। तत्कालीन इतिहास-ग्रन्थों में यह अवश्य ही लिखा हुआ मिलता है कि शाहजहां ने अपने राज्य में मन्दिरों के निर्माण का निषेध कर नवनिर्मित मन्दिरों को तोड़ने की आज्ञा प्रचारित की जिसके फलस्वरूप केवल बनारस में ही ७६ मन्दिर तोड़ दिये गये[२]। मन्दिरों को तोड़ने की आज्ञा के सामने तो हिन्दु तीर्थ यात्रियों पर कर लगाना सर्वथा सामान्य घटना ज्ञात होती है और इसलिये इसमें सन्देह का कोई कारण नहीं दिखाई देता।

"कवीन्द्र-चन्द्रोदय" जिस प्रकार श्रीमद् कवीन्द्राचार्य सरस्वती के अभिनन्दन में लिखे गये संस्कृत छन्दों का संग्रह है उसी प्रकार "कवीन्द्र-चन्द्रिका" नामक काव्यात्मक संग्रह कवीन्द्राचार्य की प्रशंसा में लिखे गये हिन्दी छन्दों का संग्रह है और यह अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में सुरक्षित है[३]। इस ग्रन्थ में अग्रलिखित कवियों के पद्यों का संग्रह है—

---

१ विशेष देखिये—"कवीन्द्र-चन्द्रोदय" (ओरिएन्टल बुक एजेन्सी, पूना) की अंग्रेजी भूमिका।

२ देखिये—"इण्डिया इन दी मुहमडन पीरियड, स्मिथ", पृष्ठ ३९६।

३ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग २ श्री अगरचन्द नाहटा, प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान, उदयपुर विद्यापीठ, उदयपुर, पृष्ठ ९२।

१. सुखदेव	संकलित	पद्य-संख्या	४
२. नन्दलाल	,,	,,	१
३. भीख	,,	,,	२
४. पण्डितराम	,,	,,	१
५. रामचन्द्र	,,	,,	१
६. कविराज	,,	,,	४
७. धर्मेश्वर	,,	,,	३
८. कस्यापि (अज्ञात नाम)	,,	,,	१
९. हीराराम	,,	,,	२
१०. रघुनाथ कवि	,,	,,	१
११. विश्वंभर मैथिल	,,	,,	१
१२. धर्मेश्वर	,,	,,	१
१३. शंकरोपाध्याय	,,	,,	१
१४. रघुनाथ शास्त्री	,,	,,	३
१५. भैरव	,,	,,	२
१६. सीतापति त्रिपाठी पुत्र मणिकंठ	,,	,,	२
१७. मंगराय	,,	,,	१
१८. कस्यापि (अज्ञात नाम)	,,	,,	१२
१९. गोपाल त्रिपाठी पुत्र मणिकंठ	,,	,,	१
२०. विश्वनाथ जीवन	,,	,,	१
२१. नाना कवि	,,	,,	१०
२२. चिन्तामणि	,,	,,	१७
२३. देवराम	,,	,,	२
२४. कुलमणि	,,	,,	१
२५. त्वरित कविराज	,,	,,	२
२६. गोविन्द भट्ट	,,	,,	२
२७. जयराम	,,	,,	५
२८. गोविन्द	,,	,,	२
२९. बंशीधर	,,	,,	१
३०. गोपीनाथ	,,	,,	१
३१. यादवराम	,,	,,	१
३२. जगतराम	,,	,,	१
३३. रामकवि की स्त्री	,,	,,	३

इस प्रकार कवीन्द्राचार्य के प्रशंसक कई हिन्दी-कवियों की सूचना भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत कृति के दो उदाहरण निम्नलिखित हैं—

[सवैया]

तीरथि सवैं अह्लाइ गाई नसताई, जाई कीन्हों काजु आजु दैषौ कैसो सुरसरीको।
कहै सुषदेव सुर नर मुनि दस नाम धन्य धन्य कहैं जैत वार वाजी अरीको।
नवों षंड दसौं दिसी दीप दीपमैं सुजसु सोर भयो जगमैं गहै या कौनु छरीको।
कवि इन्द्र सरस्वती विद्या बुद्धि महावर कर यौ छुड़ायौ ज्यौं छुड़ायो कर करीको॥

× × ×

जगत सर भयो धर्म-जल पूरी रह्यो, तामें कमल कवि इन्द्र सोहे।
भक्ति पत्र ज्ञान बीच कोस जय किंजलक सील रस मोहे।
सबको बंधन तीरथमें तीरथको बंधन काटयो सोहू सुवास उपमाकों कौ है
श्यामराम बानीबर कहें निसि दिन प्रफुल्लित यातें जु हरि रवि जोहे॥

कवीन्द्राचार्य का परिचय देते हुए श्री गंगानाथ झा ने लिखा है कि वे एक सन्यासी थे और धनवान व्यक्ति थे। उनके एक भण्डारी था जिसका नाम कृष्णभट्ट था। वे एक विद्वान् व्यक्ति थे और बनारस के पण्डित-समुदाय के प्रमुख नेता थे। उनकी विद्वत्ता के कारण ही सम्राट शाहजहां द्वारा उनको "सर्वविद्यानिधान" की पदवी दी गई थी। कवीन्द्राचार्य की विविध विषयक रुचि की सूचना उनके पुस्तकालय के सूचि-पत्र से प्राप्त होती है।

साथ ही श्री झा ने लिखा है कि बनारस में उनके पास अध्ययन के लिये चारों ओर से छात्र आते थे और इनकी सहायता के लिये कवीन्द्राचार्य ने बनारस में एक पुस्तकालय की स्थापना की थी। इस पुस्तकालय में कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संकलन किया गया था। दुःख है कि अब पिछले वर्षों की उथल पुथल में इस पुस्तकालय की पुस्तकें इधर-उधर हो गई और अब बहुत कम पुस्तकें विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित रह सकी हैं। उपरोक्त पुस्तकालय के सूचिपत्र से ही विद्वत् जगत को सन्तोष करना पड़ रहा है[१]।

श्री गंगानाथ झा ने लिखा है कि श्रीकवीन्द्राचार्य और कृष्ण भट्ट दोनों पहले गोदावरी तीर के किसी स्थान में रहते थे और फिर वे बनारस में आकर रहने लगे। श्री कवीन्द्राचार्य के जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना उनके द्वारा मुगलदरबार में आगरा पहुंच कर काशी और प्रयाग में हिन्दु-यात्रियों पर लगने वाला कर माफ करवाना है[२]।

कवीन्द्राचार्य के जीवन के विषय में अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में सुरक्षित "कवीन्द्र चन्द्रिका" नामक ग्रन्थ से भी कुछ जानकारी उपलब्ध होती है। इसमें लिखा है—

---

१ "कवीन्द्राचार्यसूचिपत्र" के नाम से कवीन्द्राचार्य द्वारा स्थापित पुस्तकालय का सूचिपत्र गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज, बड़ौदा द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

२ कवीन्द्राचार्यसूचिपत्र, गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज, बड़ौदा में प्रकाशित श्री गगानाथ झा का प्राक्कथन।

"कासी और प्रयागकी करकी पकर मिटाई।
सवहीको सव सुष दिये, श्रीकवीन्द्र जग आई ॥२॥
सकल देसके कविनि मिली, कीन्हें कवित्त अपार।
श्रीकवीन्द्र कीरति करन तिनमें लीने सार ॥३॥
श्रीकवीन्द्र द्विजराजकी लषहु चन्द्रिका ज्योति।
दुनि गुनिके दुष दहति, दिन-दिन दूनी होति ॥४॥
पहिले गोदातीर निवासी, पाछे आइ बसे श्री कासी ॥५॥
ऋग्वेदी असुलायन साषा, तिनको ग्रन्थ भयो है भाषा ॥६॥
सव विषयनिसों भयो उदास, वालपनामें लयो सन्यास ॥७॥
उनि सव विद्या पढ़ी पढ़ाई, विद्यानिधि सुकवीन्द्र गुसाई ॥८॥"

उपरोक्त कथन का समर्थन "कवीन्द्र-कल्पलता" से भी होता है। इसमें भी उपरोक्त छन्दों से मिलते हुए छन्द लिखे गये हैं :—

[चौपाई]

पहले गोदा तीर निवासी। पाछे आइ वसे है कासी ॥ ५ ॥
सव विषयनिते भये उदास। बाल दसामें लयो सन्यास ॥ ६ ॥
उनि सव विद्या पढ़ी पढ़ाई। विद्यानिधि सुकवीन्द्र गुसाई ॥ ७ ॥
ऋग्वेदी असुलायन साषा। तिन कीनी है कविता भाषा ॥ ८ ॥
कल्पलता है याको नाम। याते पावत कवि सुष-धाम ॥ ९ ॥
अलंकार गुन रससों सनी। याते कल्पलता है बनी ॥१०॥
सवहीको वर्नन है जामें। सव कोऊ सुष पावत तामें ॥११॥
कीने ग्रन्थ न जात गनाए। सव वेदनिके अर्थ बनाए ॥१२॥
भाषा करत आवति है लाज। कीनें ग्रन्थ पराए काज ॥१३॥

[दोहा]

कासीकी अरु प्रागकी, करकी विपति मिटाइ।
सवहीकों सव सुप दिये, किये धर्म अधिकाइ[1] ॥१४॥

इस प्रकार स्पष्ट है कि कवीन्द्राचार्य पहले गोदावरी नदी के किनारे रहते थे[2]। फिर वे काशी आकर वसे। उन्होंने बाल्यकाल में ही सन्यास ले लिया और ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा का विशेष अध्ययन किया। कवीन्द्राचार्य जैसे संस्कृत के महान् पण्ड़ित के

१ कवीन्द्राचार्य कृत कवीन्द्रकल्पलता के छन्द "अाथ शाहजहांके भाषा कवित्व लिख्यते" से ही प्रारंभ होते हैं। इसके पूर्व के छन्द संकलन कर्त्ता की ओर से प्रारंभिक परिचय के रूप में लिखे गये ज्ञात होते हैं।

२ विद्वानों ने गोदावरी तीर स्थित नासिक नगर को कवीन्द्राचार्य की जन्मभूमि अनुमानित किया है-कवीन्द्र-चन्द्रोदय, भूमिका पृष्ठ ३।

लिये भाषा में काव्य-रचना करना लज्जा की बात माना गया है–"भाषा करत आवति लाज" और लिखा गया है—"कीने ग्रन्थ पराये काज" अर्थात् परोपकार के लिये ही भाषा-ग्रन्थ लिखा गया है।

श्री कवीन्द्राचार्य विरचित प्रमुख ग्रन्थ "कवीन्द्रकल्पद्रुम" माना जाता है और यह लन्दन की "इण्डिया ऑफिस लायब्ररी" में सुरक्षित है। इस ग्रंथ से भी उपरोक्त कई विषयों का समर्थन होता है:—

× × ×

गोदातीरे प्रमोदावलिवलिततमे जन्मभाक्पुण्यभूमाव।
ऋग्वेदी वेदवेदी जगति विजयते श्री कवीन्द्रोद्विजेन्द्रः॥
अधीत्य वेदवेदाङ्गकाव्यशास्त्राणि सर्वशः।
ततः स्वीकृत्य सन्यास ब्रह्माभ्यासं समाश्रितः[१]॥

"कवीन्द्र कल्पलता" नामक भाषाकाव्यकृति संभवतः कवीन्द्राचार्य की एक मात्र भाषा कृति है। इसकी एक प्रति उदयपुर के सरस्वती-भण्डार पुस्तकालय में और दूसरी प्रतिलिपि मेरे संग्रहालय में है।

कवीन्द्र-कल्पलता में निम्नलिखित विषयों का समावेश हुआ है—

१ साहजहांके भाषा कवित्त, छन्द संख्या १०८, पृष्ठ सं० २ से १९।
२ श्री साहिजहां जूके धुरपद[२], संख्या ५५, पृष्ठ संख्या २० से ३४।
३ विष्णु पद, संख्या १०, पृष्ठ ३५।
४ तत्वज्ञान विषयानि भाषा पद्यानि, संख्या ६०, पृष्ठ ३६ से ४६।
५ दारासाहिके कवित्त, संख्या २७, पृष्ठ ४७ से ५५।
६ वंग साहिब के कवित्त[३], संख्या १, पृष्ठ ५६।
७ नाना स्तुति विषयक प्रास्ताविक कवित्वानि[४], संख्या २, पृष्ठ ५७।
८ पुनः दारासाहि कवित्त, संख्या २ पृष्ठ ५८
९ मिरजा मुराद काम के कवित्त, संख्या २, पृष्ठ ५९
१० प्रस्ताविकानेक कवित्व ध्रुपदानि, संख्या २, पृष्ठ ६०

"कवीन्द्रकल्पलता" ब्रजभाषा काव्य की एक अनूठी कृति है। इसकी रचना श्रीमद् कवीन्द्राचार्य द्वारा काशी और प्रयाग में हिन्दु-यात्रियों पर लगाये गये कर के निवारण में सम्राट शाहजहां की आज्ञा प्राप्त करने के लिये ही हुई ज्ञात होती है।

---

१ कवीन्द्रचन्द्रोदय, ओरिण्टल बुक एजेन्सी, पूना भूमिका पृष्ठ ३।
२ "धुरपदों" के बीच में कवित्त, झूलना आदि छन्द भी हैं।
३ "साहिब वेगमजूकी साहिबी अचल रहो।
तात ही समेत भ्रात प्रीतिहि समेत है" से स्पष्ट होता है कि कवित्त मुमताज महल की प्रशंसा में लिखा गया है।
४ सम्बन्धित कवित्तों में हयातिखां और सिपहसालार सैयदखान की प्रशंसा की गई है।

"कवीन्द्रकल्पलता" में मुगल-सम्राट की गौरव-गरिमा, वीरता, दान आदि का युग के अनुकूल सरस चित्रण हुआ है। इस कृति में सर्वथा शुद्ध ब्रजभाषा का माधुर्य, भावों का अनूठापन, अलंकारों की छटा और कवि की अपूर्व क्षमता एवं विविध विषयों की जानकारी दिखाई देती है। "तत्व ज्ञान विषयानि भाषा पद्यानि" में धर्म, दर्शन और वेदान्त के विविध तत्वों को सरल और सरस भाषा में व्यक्त किया गया है जिनसे कवि के महान् पाण्डित्य का परिचय मिलता है।

वास्तव में "कवीन्द्रकल्पलता" हमारे साहित्य की एक विशेष काव्य कृति है, जिसका प्रथम बार प्रकाशन राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर की ओर से किया जा रहा है। इसका प्रधान श्रेय परम आदरणीय मुनि श्री जिनविजय जी महाराज को है जिन्होंने मेरे संग्रह में इस कृति को देखते ही प्रकाशन की अभिलाषा प्रकट की और तुरन्त ही "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" में प्रकाशन का प्रवन्ध भी कर दिया। इस महत्त्वपूर्ण कृति के प्रकाशन के लिये श्री मुनि जी महाराज वास्तव में समस्त साहित्य-जगत की ओर से विशष धन्यवाद के अधिकारी हैं।

लक्ष्मी निवास कोटेज,
बनीपार्क, जयपुर।
दीपावलि पर्व २०१५ वि०सं०

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

विषय-सूची

कवीन्द्राचार्य–सरस्वती–विरचित

कवीन्द्र-कल्पलता

॥ श्री वरदमूर्त्तये गजाननाय नमः ॥

नत्वा वाणीं भवानीं च भवं शंभूद्भवं तथा ।
हृद्यानि भाषापद्यानि कवीन्द्रः कुरुते कृती ॥ १

कवीन्द्रः कल्पलतिकामनल्पफलकल्पिकाम् ।
कवीनां कामनावाप्त्यै प्रवीणां कुरुते कृति ॥ २

अनल्पकल्पनाकल्यां कल्पान्तस्थितिशालिनीम् ।
कवीन्द्रकल्पलतिकां सन्तो जल्पन्तु कल्पकाः ॥ ३

गुरु गनपति संकर सिवा विष्णु दिनेसुर लेषि ।
मनसा वाचा कर्मना प्रणवों सुरनि विसेषि ॥ ४

[चौपाई]

पहिले गोदा तीर निवासी । पाछे आइ वसे हैं कासी ॥ ५
सब विषयनिते भए उदास । बाल दसामें लयो सन्यास ॥ ६
उनि सब विद्या पढी पढाई । विद्या निधि सु कवीन्द्र गुसाई ॥ ७
ऋग्वेदी असुलायन साषा । तिन कीनी है कविता भाषा ॥ ८
कल्पलता है याको नाम । याते पावत कवि सुष धाम ॥ ९
अलंकार गुन रससौं सनी । यांते कल्पलता है बनी ॥ १०
सबहींको वर्नन है जामैं । सब कोऊ सुष पावत तामें ॥ ११
कीने ग्रंथ न जात गनाए । सब वेदनिके अर्थ बनाए ॥ १२
भाषा करत आवति है लाज । कीनै ग्रंथ पराए काज ॥ १३

[दोहा]

कासीकी अरु प्रागकी, करकी विपति मिटाइ ।
सबहीकों सब सुष दियें, कियें धर्म अधिकाई ।। १४

अथ साहिजहांके भाषा कवित्व लिष्यते

सूरज ससंक सुधा समर सुरेस,
सुरजौ लगि रसाके सातो सागरके फेर है ।
संभु सिवा सुरसरी सुरग सलिल सिंधु,
समीर स्वयंभु सैल वरुन कुवेर हैं ।।
व्यास बलि विभीषन वायुसुत अश्वत्थामा,
लोमस भुसुंड सुंड मारकंड से रहैं ।
साहिजहां साहि सदा साहिब किरान,
सानी तों लौ रहे जौ लगि फनीस सीसमैं रहै ।। १

तियामें सिंगार रस रन माह महावीर,
दीननिमें करुना है अद्भुत करनी ।
हसौं और साहिनकौं डरु जगदीस हीतें,
पापतें घिनात अरि तम तेज तरनी ।
अति ही परम ज्ञान महा ज्ञान,
संत रस चिरंजीवी हू जे तोलौं जोलौं ध्रुव धरनी ।
धरनी ऐसी विधि नौ हूं रस मई रीति,
भांति-भांति साहीजहाँ साहजूकी कवि इन्द्र वरनी ।।

षलदल भंजन हैं भारी भीर भंजन हैं,
दोरमें प्रभंजन ज्यौं अंजन लसत हैं ।
रन मांझ रावत हैं वैरी निहरावत हैं,
अति हीं डरावत ऐरावत ससत हैं ।
धारा धर जीतें रंग धरा धर जीतें,
अंग जंगके जितैया जोर जालिम रसत हैं ।

कहै कविराज मृगराजनि मरोरि मारें,
ऐसे गजराज साहिजहां वकसत हैं ।। ३

विंध गंध मादनके वधवसे सिंधुर,
जे सिंधुते निकारे देषि वैरी तरसत हैं ।
गाढे गढ मढनि ढकानि ढाह डारे,
ढूंढि फौजनि विडारे सदा मद वरसत हैं ।
सजल जलद हुतें गरजें लरजें,
घन घंटा घौर जंजीर जकरे दरसत है ।
ऐरावतके साथी षलदलके प्रमाथी,
ऐसे हाथी साहिजहां देत सरसत हैं ।। ४

मेटी है जगतपति राषी है जगतपति,
सुनिये जगतपति जसु लीजियतु है ।
सिद्ध साधुकी असीस लेत सुद्ध सूधे मन,
सोधि साधि सुधानिधि सुधा पीजियतु है ।
चकवा विछुरे रात चकई विछुरि दुषी,
साहिजहां तातें इन्है दया कीजियतु है ।
राति हीमें चोरी होत अंधेरो मिटायो चाहो,
ताहींते सुमेरु काढि वांटि दीजियतु है ।। ५

जैसे एक्कै करतार सबहीको भरतार,
तैसे एक्कै छत्रपति साहिजहां छमामैं ।
जाकि एक दरवर जेर सवै नरवर,
जाके डर वैरीवर भए सब तमामैं ।
सातों सिंधु सातो लोक जैते अध ऊरध हैं,
तेते सब एक्कै होत जाके देत दमामैं ।
जैसें एक सूवा कहु कैऔ सरकार लोग,
छहों दीप लागे ऐसें जेंबू दीप जमामैं ।। ६

दलदल सूषि जाति सूषि दलदल होति,
मेदिनी दहलि जाति जाकी भारी फौजते ।
साहिजहां भुजा लषि लाजत भुजंग राज,
भाजत है भारे भूप परताप अजतें ।
अनगने गांउ देत परगने सूबा देत,
देसत देत दिसा देत निसा देत रोजतें ।
हांसीहीमैं कासी देत पलमें पयाग देत,
ऐसी ऐसी देनि कहो कहां भई भोजते ॥ ७

छत्रपति पति एई रतिपति पति एई,
पतिहूंकी पति ऐई साहिजहां साहि हैं ।
कुरान पुरान जानें वेदनिके भेद जाने,
एती रीझ एती बूझ और कहो काहि हैं ।
सुमेरको सौनो देत दीन दुनी दोनो देत,
सबके दहे है दुष मेरे दुष दाहि है ।
सबसों निवाही एही सबकों निवाहत है,
मौहू सो निवाही अरु मोहूंको निवाहि है ॥ ८

बाजत निसान घमसान घमसान होत वैरिनके,
मंदिर मसान होत जाकी एक दौरतें ।
घोरे घुरथारनि पहार जरि छार होत,
मेर गिरि गिर जात दमामेकी घोरतें ।
उलटि दिसानि धरें पव्वय पिसान करैं,
जलसों कृसान भान परताप जोरतें ।
तौंसो न भयो है पाछे आगें हू न ह्वैहैं और,
साहिजहां गाजी साहि साहि सिरमोरतें ॥

[सवैया]

वैरिनिकी वनिता वनमें विललाइ वकै जिनि बात कहौ हौ ।
चीतेनिसों जुब चीति कहै इनि स्यारनि मांझ हु स्यार रहो हौं ।

साहिजहानकी दौरति फौज रहे गिरि क्यौं गिरिराज गहो हौं,
वाहिर जाहु न जाहिर होहु न नाहर है चुप नाह रहो हौं ।। १०

[कवित्त]

अचल विचलि जात चलाचल चलि जात,
षलदल दलि जात जाकी एक दौरते ।
मलि जाति मेदिनी औ हलि जात हेमगिरि,
लंका ऊ पिघलि जाति परताप जोरते ।
डुलि जात तलातल गलि जात घन वन,
मिलि जात सातो सिंधु दमामेकी घोरतें ।
दुज्जन भए हैं जेर लागीं न तनक वेर,
साहिजहां गाजी साहिसाहि सिरमोरतें ।। ११

वह वलि वलि कीजै वैन वेन सम,
करनके करनितें करनी सरस है ।
संच नद धरमहींकौं वंचन वचन हैं,
न रंचन कठोर हींको कंचन वरस है ।
आ रस हूं नेंक जो कृपारस निरष्यो जाहि,
तिनते सुमेर होत पारस परस है ।
सबकी विपति भाजी दुनी है निवाजी राजी,
साहिजहां साहि गाजी साहिब तरस है ।। १२

चीरा हीरा हय गय जर जरी साजि जिमी,
दिन दिन दूनो देइ कीत्ति लीजियति है ।
साहिजहां राजनिकी राजधानि छानी,
छीनि साहिनिकी साही लीनी औरें दीजियति है ।
वाजै वैरी वारि वोरे वाजे वैरी वारि डारे,
प्यास लागे पिया पिय आंसू पीजियति है ।

जौ लौं पाछिली फतूहको कवित्त करें;
तौ लगि फतूह और औरे कीजियति है ।। १३

अरव षरव लौं दरव देयो जाही ताही,
गरव गवाये हैं कलप तरवरकें ।
गुनी कविराज हंस सेवत हें दरबार,
षोए हैं गुमान मान मानसर वरके ।
जसके निधान भान पंचवान उपवान,
साहिजहां साहि है मिटैया कर वरकैं ।
रूप रस जस दान ज्ञान ध्यान,
सनमान कहा लौं वषानिये गरीब परवरके ।। १४

उछरत छोनी पर छानन छुवत पग,
पछ बिनु पछिराज पछ गहि लेत है ।
मनमें रतीक तेजु इनमें हैं मन,
मन तोरादार जोरावर तमासा निकेत हैं ।
दारिद जरावने जराइनि जराए सब,
सौने हीके साज साजे जीननि समेत है ।
मनके हिरोल मोल लाष लाष लहे गोन,
पोनते सवाए घोरे साहिजहां देत हें ।। १५

वेनी गहि षेंचत हैं आंचरको ऐंचत है,
अधर कुचनि छ्वत है दैवि हरत हैं ।
भौंर-पुंज गुंजरत याही मिस बोलत है,
फूल फूले हसें मानौं नैंकु न डरत हैं ।
पौंन डौले डार भुज पल्लव अंगुरी,
पाँनि बुलाइ समीप मानों अंगिया हरत हैं ।
कामी से वैं तरुवर साहिजहाँजूके डर,
वैरिनिकी कामिनी कै हाल य्यों करत हैं ।। १६

[दोहा]

करन भरन अरु संहरन, ब्रह्म हरि हर तीन ।
अलष पुरुष एक्के रच्यो, साहिजहां परवीन ।। १७

ज्यौं वरिषा घन वूंद अरु, सारे गने न जात ।
साहिजहां गुन गनत त्यौं, कविकुल अकुलात ।। १८

और भूप सब कूप, सर सरिता सम आन ।
साहिजहां साहिब, किरांसानी समुद समान ।। १९

आन करे कवि कहत हैं, उपमा बने न आन ।
रिपु जस उडुगन मानियें, साहिजहां दुति भान ।। २०

[सवैया]

दारिद षंडन वैरी विहंडन, साहिजहां सुजसै सरसावैं ।
ज्यों मघवा जलकों वरिसावत, त्यों नित ही मुहरैं वरसावैं ।
भारथमें पुरुषारथ पारथ, तेज दिनेस जगै दरसावै ।
चंड अषंड प्रताप तपैं, वर वैरिनिकी वनिता तरसावैं ।। २१

साहिजहान जहानके साहि, भुवप्पति भाट भए गुन गावै ।
वार न लागति वारन पावत, जे कवि चारन वार न आवै ।
देस विदेस वजार वजार, हजारह जार हजार गनावैं ।
लाषनि नषनि लाषनि देत, करोर करोर करोरनि पावैं ।। २२

[कवित्त]

ज्ञान गनपति जीत्यौं दानके करण जीत्यो,
पारथ कमान वान तो समान कीजिए ।
नूप वर पंचवान तेज दुत्ति इंद भान,
सोधिकैं सुधा निधितें सुधापान कीजिए ।
आन करें कहैं षान सुरितान य्यौ वषान,
दूसरो न आन उपमान जाहि दीजिए ।

जसके निधान महा जान मनि साहिजहां,
जीवन जहानके हौ जुग जुग जीजिए ।। २३

सिंधु मथि काढे जे वै विधितें अधिक,
वाढे धावत जिनके धराधर सकत है ।
कोल कलमलें दलमलें दृगपाल दसों,
सेसके सहसौ सीस सवै मसकत है ।
कमठकी पीठि फूटि टुटि कटि कटि जात,
कांध कर करकत हाड हाड कसकत है ।
साहिजहां मृगराज महाकवि राजनिकों,
सोने साज ऐसे गजराज वकसत है ।। २४

कमठ पीठि कसमसति धरनि धसमसति चढत तव,
दिघ दुवन दलमलत दसौ दिगपाल डुलत भुव ।
अचल चलत दलत हलत चल दल दल षल दल [त]
सकल विकल रिपु षलक मिटिग छल वल वल भुज वलत ।
साहानि साहि-साहि जहं नृपति सुनि दुंदुभि घनघोर धुनि,
फुं फुं फनिंद फनि फुंकरत घुफटत फनावलि फुट्टि पुनि ।। २५

शाहिजहं साहि सव भुवन तुव सुजस हुव,
दुवन दल गंजि रसु अमृत पीजे ।
भोजु वह कोजु हरिरोजु यह मौजु,
दिल सोज रस चोजु हरिषोजु कीजे ।
नित्त सतसंग अग अंगर सरंगर पारंग,
जुरि जंग जप तुंग लीजै ।
सब मुह मोरि सिर तोरि टक टोरि,
झकजोरि दह वोरि जुग कोरि जीजै ।। २६

दपट मृग राजकी झपट वर वाजकी,
लपट मनु दहनकी दौरि छीनी ।

परम सुष साजकी धरम पर काजकी,
निपट रज राजकी रवानी लीनी ।
दुवन संहारि कै सुजस संचारि कै,
कित्ति विस्तारि कै पार कीनी ।
लंकगढ तोरि कै मेरगिरि फोरि कै,
कविन कहु कोरि वकसीस दीनी ॥ २७

दुवन सत षंड है सुजस नव षंड है,
चंड अरि झुंडको मुंड षंडै ।
प्रवल भुजदंड वर देन नृप दंड हे,
गहत नृप आंनको पीन दंडै ।
कित्ति श्रिम पंड सील सति ब्रह्मंडमैं,
निपट वरि वंड दुष दारिद विहंडै ।
भूमि आषंड आषंडल समान है,
साहि मंहि मंडल हि मंडै ॥ २८

[त्रिभंगी]

जनु रवि परचंडै तपतु अषंडै जसु नव षंडै फैलि रह्यो ।
जिंहि सोहतु ब्रह्मंडै हनतु पषंडै नृप वर दंडै कविन कह्यो ।
मंहि मंडल मंडै करतु घमंडै उदधि उमंडै घलतु दलै ।
वकसतु गज झुंडै विपति विहंडै अरिवर षंडै धरनि पलै ॥ २९

[विजया]

वन वसत अरि त्रसत फल ग्रसत नहि लसत,
हिय नसत कसमसत धसमत डर रोजकैं ।
अक वक तजक जक तल कलकत धकधकत,
डरि सकत लरि सकत नहि तकत भुज औजकैं ।
दवि रहत रवि महत छवि गहत कवि कहत,
सुष गहत दुष दहत तुव लहत मोजकैं ।

गिरि हलत धर दलत फनि ललत कलमलत,
दलमलत रिपु जलत तुव चलत फोजकें॥ ३०

[हरिमोहन]

बुद्धि सदन चंद वदन रूप मदन पेषियें,
दुवल दवन धरनि रवन ईस जवन लेषिये ।
कित्ति धवल लाल नवल वाह् वल विसेषिये,
जस निधान महाजानसाहि जहां देषियें ॥ ३१

[प्रमाणिका]

प्रचंड सत्रु षंडिके प्रसन्न जाहि चंडिकै,
अडंड भूप दंडिकै अषंड भूमि मंडिकै ।
जहान साहि कामसों लसें अनंद वामसों,
रच्यो अलेष नामसों सदा उदार दामसों ॥ ३२

[कुण्डल]

सदन हरि सवानी आई तोसो रवानी ।
वदन सति वानी वाहमें सों भवानी ॥ ३३
हहरति रिपु रानीं छाडि ठौरे पुरानी ।
सघन वन दुरानी दूरि दौरै षुरानी ॥ ३४
तुव लसति कृपानी साहिने जाहिमानी ।
रिपुजन सनमानी जे महा है गुमानी ॥ ३५
करन अधिक दानी साहिजहां सुज्ञानी ।
दिन दिन अधिकानी राजधानी वषानी ॥ ३६

[प्रमाणिक]

पयानके विचारमें दुवन्न हाल य्यौं धरैं ।
भर भरैं तरफरैं डरें गिरैं मरैं जरैं ॥ ३७
फनिंद फूलि फुंकरै सहस्स सीस संकुरें ।
वराह घोरि घुंकरें कूरम्म कूकि कुंकरै ॥ ३८
प्रताप तेज रावरे भए दुवन्न बावरे ।
ते डारि तीय डावरैं भये अकित्ति सांवरैं ॥ ३९

[सुगति]

कटक सज्जहि, सुभट रज्जहिं। पटह वज्जहिं, द्विरद गज्जहिं ।। ४०
जलद लज्जहिं, दुवन भज्जहिं। घरनि तज्जहिं, तिविनु कज्जहिं ।। ४१
जलधि मज्जहिं, नहि उपज्जहिं। समुद सुक्कहिं, धरनि धुक्कहिं ।। ४२
तरनि लुक्कहि, दुवन रुक्कहि। मतनि चुक्कहि, सुतन मुक्कहि ।। ४३
गरद वुक्कहिं, वननि भुक्कहि। विष सुरक्षहि, भुव डलक्कहि ।। ४४

[दोहा]

साहिजहांन नरेसकें, चढ़त बढ़त रसवीर ।
सिद्धि रिद्धि वल बुद्धितें, (सु) रिपु जन धरें न धीर ।। ४५

[अमृत धुनि]

साहिजहां लोहनि सरस, बरसत नित नव निद्धि ।
रीझि रीझि तंडव करें, तधिद्धि द्धुनि हर सिद्धि ।। ४६

द्धरिनठ विद्धिद्धुवगति अग्ग, गायरन मग्गग्गव ।
रिप भग्ग सज्ज ज्जन नुव वज्ज ज्जय रव ।। ४७

मज्ज ज्जल थल सद्द द्दलिल समद्द दुवन दुरद्द द्दल ।
वल साहिजहांन नरिंद जू कह्यो दुवन पर क्रोधु षल ।। ४८

षंडन घन रन रच्यो सु अद्ध द्धकटित योद्धुत ।
अद्धद्ध कटित युद्ध द्धसकत धद्ध द्धरकत ।। ४९

घग्घग्घन गन दिग्घट भरि घघ्वघ्व घटकत ।
जुज्झ ज्झरि सिरगि ग्जगर पटतग्ग ग्ग टकत ।। ५०

साहिजांन महावली, जतैं रिपु हनें समग्ग ।
लरि न सकत अरि डरनिते, सुभग्गि ग्गे तिय मग्ग ।। ५१

तभग्गि गो तिय मग्गग्गंहन सरग्गग्गति ।
धर सुजज्जलित अधिज्ज ज्जल बिनु विज्ज ग्गरति ।। ५२

अरु झग्गरि लटमज्झ ज्झटकत सज्ज—दल घन गज्ज
[त] तुवरि पुकज्ज व्विन नर लज्ज ज्जंभजत विरुज्झ गग टकत ।। ५३

साहिजहां जीत्यो प्रवल, रन पंडित खरंग ।
अंग अंग षल षंडियो, सुजंगग्गति रिपुभंग ।। ५४
सुजंगग्गति रिपुभंग ग्गदन मृदंग ग्गरज्जहिं अंग ग्गहत वरंग ।
ग्गनगुन गंग द्धर सुपतंग, ग्गतिधर तुंग ग्गलित तुरंग ।। ५५

[करहस]

व्वलित मतंग, ग्गिरिसम पतंग ।
ग्गिरत तह जंग, जुरत रिपु संग ।। ५६

मुरत सर वंग, दुरत रन रंग ।
फुरत चतुरंग, तुरत उतमंग ।। ५७
कटत रिपुरंग, घटत सम चंग ।
नटत विनु अंग, लटत अरधंग ।। ५८

फरित अतिवंत, डरित वन जंत ।
चरित सव संत, हरित यह तंत ।। ५९
फरित रिपु मंत, जरित हनि मंत ।
तरित मय मंत, लरित चनु दंत ।। ६०

भुटित भुटि मुंड, मुटित भकरुंड ।
टुटित तर डुंड, विकट मुटि मुंड ।। ६१
गिरित गिरि रुंड, भिरित अरि झुंड ।
मिटत भरि कुंड, रुहिर निज टुंड ।। ६२

पिवत हर पत्त, भरत रितु गत्त ।
भषत अकुलत, फिरत मय मत्त ।। ६३
गवरि गन तत्तु, उघटि रन नृत ।
.... ।। ६४

करति कवि सन्त, कहत विकसन्त ।
सकल तुव मित्त, सुषित ह्वव नित्त ॥ ६५

[छप्पय]

रहत वटत मठत परिताप चढ़त ।
गढपत्ति डरत दुष कलंक आतंक अंक संकत ॥ ६६
निसि वासर षंड षंड षल षंडि अवनि मंडल कुल मंडन ।
बाहु दंड वरि वंड चंड अरि झुंड विहंडन ॥ ६७
साहानि शाहि शाहिजहं नृपति सु एक्क वार किरवार लिय ।
परचंड तेज भुजदंड वल सु षलदलबल सब दल मिलिअ ॥ ६८

[दोहा]

पूरब दिसि जय जीति कैं, सुनो अपूरब बात ।
तुव प्रताप रवि तेजतें, रिपु तम ज्यों मिटि जात ॥ ६९

[भुजंगप्रयात]

तुम्है राजकी जीतिकी जोति फावी ।
अकूपारके पारकी भूमि दावी ॥ ७०
गुमानी न मानी जिन्हो आन तेरी ।
करे तीयसो पीय चेरारु चेरी ॥ ७१
करे चूरवी बूरवो सब्वि सेते ।
जरे तेजके जोरसौं और केते ॥ ७२
नदीमैं घनै सिंधुमें डारि वोरे ।
घने षग्गके अग्गसों मारि तोरे ॥ ७३
तुम्हें राजकी जीतिकी जोति फावी ।
अकूपारके पारकी भुम्मि दावी ॥ ७४

[दोहा]

दछिन दिसि तिय वस करी, दक्षिन लछिन ठानि ।
साहिजहांन निवाहिकै, करत पेमु यह जानि ॥ ७५

[भुजंगप्रयात]

घने दषिनी भषिनीके संघारे ।
सदा जीतिके जोर बाजे नगारे ॥ ७६

कहां लौं गनावौं किते देस छीने ।
करौरै रुपैयारु दीनार दीनै ॥ ७७

भए दास वीजापुरी वाज आए ।
तिहारैं सवै वे भये चित्त भाए ॥ ७८

सदा क गोलकुंडा महीपाल सेवें ।
हुकुमुतें सवै छाँडि दीनी कुटेवैं ॥ ७९

सु हाथी सु हीरानिकी भेंट लीनी ।
जिमी जीतिके फैरिके तें न दीनी ॥ ८०

[दोहा]

तुम्हैं राजकी पछिम पतिन छिम, सकल सकत न तनँ संभारि ।
सुनतहिं शाहिजहांनके, धुनत नारि अरि नारि ॥ ८१

[भुजंगप्रयात]

हुते आपने देशमें जे सुषारी ।
किये कोपिके माहि तेते दुषारी ॥ ८२
कृपातें किये किये हैं सुषारी ।
वुषारीनि कीनी ऊनीके उषारो ॥ ८३
कहे तीयसों होइ सो जोत लिषारी।
कह्यो राजु वैं सो भए अभिषारी ॥ ८४

छोनिके छेहके छानिकै राज छीनै ।
पुराशान केते पिरेशान कीने ॥ ८५

अरव्वी सिधिवु गरव्वी जुन छीनि तोरे ।
घने रूमके सामके मारि मोरै ॥ ८६

[दोहा]

उत्तर दिसि जय जीति कै, उत्तर कहै बषानि ।
नौनि जोरतें जीति, लई सव षानि ।। ८७

[भुजंग प्रयात]

किते उत्तरी तोरि कैते उतारै ।
उए भानके होत जेसें सु तारें ।। ८८

सवै राजफों साजको छांडि भाजै ।
गुना ही हने फेरि बाजेति बाजे ।। ८९

किते तेजके जोरिसो जारि डारे ।
किते सत्रु संसार हीतें विडारे ।। ९०

असीसैं सुधा सी सदा पान कीजै ।
पृथो साहिजाहां जुग क्कोरि जीजै ।। ९१

[दोहा]

शाहिजहां दिल्लीस वर, विलसत सब सुष जीति ।
हरि रसतें हरितें सरस, पाए पेम प्रतीति ।। ९२

[कवित्त]

मंडत घमंडिकै असंड नव षंडनिमैं,
चंड मारतंड जोति लौं वषानियत हें ।
प्रले पारावार पय पूरसे पसरि परे,
पुहमीके ऊपर य्यों पहिचांनियत हैं ।
षंडवके दाह समें पंडवके वान जिमि,
मंडि महिमंडलकै अरि भातियत है ।
साहिजाहं शांहिजूंकें फौजके फैलाइ देषौं,
जंबूदीप सींउ भरि तंबु तानि यत है ।। ९३

वैरीको वहाइ वोरे गाढे गढ कोट तोरे,
गिरि गहवर कौरै ऐसेइ सुभाईकी ।

घन वन चूरि डारै षलदल घेरि मारें,
सत्रुके उजारे देस भांति प्रलै वाइकी ।
कंधार कहा है इसु पाह दहवट्ट ह्वै है,
रहै न निशानी जीति देषो इह दाइकी ।
अरिनिकी फौजेकू पनारे सीपनारे सी हैं,
साहिजहांजूकी फौजें मोजैं दरिआइकी ।। ९४

[दोहा]

सपत दीप नव षंडमें, भुवन चतुर्दश मांहि ।
शाहिजहाना वाद सो, नगरु दूसरो नांहि ।। ९५

नहि उपमा को दूसरो, जामैं छरि नु सवाद ।
शाहिजहांना वादसो, शाहिजहानावाद ।। ९६

नैनरस न जाके सहस, सेस सुरेस समान ।
शाहिजहानावादको, निरषि सु करे बषान ।। ९७

[कवित्त]

मंदिरतें ऊंचे मनि मंदिर ए सुंदर हैं,
मेदिनी पुरंदरकौ पुर दरसतु है ।
हियेमें हुलास होत नगर विलास लषि,
रूपक विलास हूतें अति सरतु है ।
दुंदुभि मृदंग नाद विविध सवाद जहां,
सु साहिजहानावाद सुष वरसतु है ।
छहौं ऋतु छाई छाजै आछी छवि देषनको,
मानव कहा कहै इन्द्र तरसतु है ।। ९८

अंगनिमें जैसे नैन वैननिमें सांचे वैन,
ज्ञाननिमैं ब्रह्मज्ञान उत्तम वषानिये ।
नरनिमैं सुरतर नरनि ज्यौं गृहनिमें,
मनिनमें चिंतामनि जैसे महा मानिये ।

सरनिमें मानसर सरिनमें सुरसरी,
गिरिनमें मेरगिरि वडे उर ग्रानिये ।
दीपनिमें जंबूदीप साहिनमै साहिजहां,
नगरमें त्यौ साहिजहांनावाद जानियें ।। ९९

सुरगतें नीचेपें निकाईकें निपट ऊंचें,
जाके ग्रागे वैजयंत जोति न जगति हैं ।
साहिजहां शाहिजूके मंदिर सपेदी ग्रागें,
निपट ग्रंधेरी राति चांदनी लगति है ।
लाल लाल लालनिकी लाली दौरे ग्रासमान,
चाँदनीमें दिनै होत चांदनी भगति है ।
नीले नीले मनिनकी नीलो कांति हीतें रात,
दिनै होति राति भांति भांतिनि जगति है ।। १००

[सवैया]

नीरज तीरकी भीर गंभीर गत्यैक समीरकी जानि न जानी ।
घरीमें घटा घुमड़े घन घोरि घरीकमें पोन घरीकमें पानी ।
देषि ग्रपार विचित्र चरित्र कहा वरनें मतिहैं मुरझानी ।
साहिजहांनके तेज प्रतापतें भांति कछूक कवीन्द्र वषानी ।। १०१

[कवित्त]

फूले फरे बाग देषि तन मन फूलत है,
हरित निहारें हार हियरा हरत हैं ।
लाल लाल लाला देषि लोल मन ललचात,
पीरे २ फूल मन पीरहि हरत है ।
ऊपर ग्रपार हेतु सार घनसार सम,
ऊजरे पहार मन ऊजरो करत है ।
सीतल समीर धीर सुषमीर कसमीर,
नदी तीर तीर साहिजहां विहरत हैं ।। १०१

[सवैया]

घरीकमें रैन घरीकमें द्यौस, घरीकमें सांझ, घरीमें सवारो ।
घरीकमें घाम, घरीकमें छांह, छम्रौ ऋतु छाय रही दिन सारो ।
सीत हिमंत वसंत गिरीषम है, वरसा सरसाइतु सारो ।
धीर उसीर सुगंध समीर, यहै कससीरकी रीति विचारो ।। १०३

[कवित्त]

वाजे वाजे वहु अंग सेना साजें चतुरंग,
दिग्गजसे गजराज आगेही जियत हैं ।
सातौ दीप सातौ सिंधु नवो षंड दसो दिशा,
लोकालोक लौं दुहाई देस लीजियत हैं ।
साहिजहां साहि सोहैं साहिब किरान शानी,
सबकी असीस ए अमृत पीजियत है ।
यामें नाहीं कछू फेर लागे न तनक वेर,
याकी समसेरि जग जेर कीजियत हैं ।। १०४

अंबर सी भई भूमि हयषुर थारनिसों,
छाई छिति अंबरमें पव्वय पिसानकी ।
दिगपाल दलमले कछ कोल कलमलें,
झलहलें सिंधु सुधी धूली है इशानकी ।
करि घमसान अरि नगर मसान कियें,
धाई है दिसानि धोर धमक निसानकी ।
साहिजहांजूकें त्रास वैरी वनवास गहैं,
राइ राजा राना रीति गहत किसानकी ।। १०५

गज्जत है गजराज वज्जत नगारे भारे,
लज्जत सघन घन भज्जत दुवन हैं ।
धुक्कत धरनि धर लुक्कत तरनि कर,
चुक्कत मतनि वैरी मुक्कत सुवन है ।

छुट्टत कमान गढ गाढे कोट टुट्टत हैं,
फुट्टत हैं सातों सिंधु कंपत भुवन हैं।
ईस दस सीस सम सीसनिसो आइ आइ,
साहिजहांजूके पाइ लागत छुवन हैं ।। १०६

बाजै जब बाजे बैरी एक मिले एक भाजे,
वाजे हैं निबाजै बाजै घेरि घेरि मारे हैं।
पर पुर परजारें सब देस हैं उजारे,
कहत हहारें हारे दुवन निहारे हैं।
मंडियत नव षंड षंडियत षल झुंड,
दंडियत तेहैं जें अडंडी भूप भारे हैं।
शाहिजहांजूके डर डांग डांग डोलत हैं,
डारि डारि डाबरनि बैरी जे विडारे हैं ।। १०७

बाजत ही भेरी ढक्का ढहे गढ कोट पक्का,
चक्काचूर वैरी होत चक्काके संभारे हैं।
सातो दीप जाकी सत्ता रविते प्रताप तत्ता,
ऐसौ है चकत्ता मदमत्ता वैरी जारे हैं।
धनुषके टंकारमें लंकापति शंका माने,
बसे है पलंका बंका और को विचारे है।
साहिजहांजूके वैर भग्गत वचत कौन,
षग्गनिके आगसों समग्ग षंडि डारे है ।। १०८

इति श्रीसर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्यसरस्वतीविरचितायां कवीन्द्र-कल्पलतायां साहिजहां विषयक भाषा कवित्वानि ।

अथ श्रीसाहिजहांजूके ध्रुरपद

लालन पग धारिये तिय तिहारो मगु चितवति ।
नेंकके आहट्ठु चौंकि परति सुमिरनहींमैं निसि दिनु चितवति ।
तिहारे रूप गुन चतुराईनि मन भरति और वातनिते मनु रितवति ।
साहिजहां पिय तिहारे मिलनको तिय तरसितवति ।। १

तेरे री मुषको चंदकी उपमा देत,
अब लौं मन न आवति ही सु अब आई ।
तुव सुंदर बदनमें अंकु न देष्यो हो सु देष्यो,
तासों पटतर दीवो यहै कलंक री माई ।
चंद जोति दिन दिन घटति,
तुव मुष जोतिकी दिन दिनकी अधिकाई ।
याहीते प्यारी तू साहिजहां प्यारेके मन भाई ।। २

आली री हौं चाहति हीं,
भांति-भांति उराहनो देन ।
काहू सौं करत सेना ओरके करत सेन,
अरु काहूं दीजे सुष सेन हम तरसै न,
बलि वेनते अधिक मेरी कहा वह वेनकी,
सुधि कीजैं जानती हौं तुम वैन ।
ऐनमे न मेंन सूरति साहिजहाँ निरषत ही,
मैं न जानी मान कहा कहावत सुधि रही मनमै न ।। ३

साहिजहांकी छविको कवि समुद्रकी उपमा देत वार वार उपमा बनति नाहीं ।

वामै चौदह रतन तेऊ मथि लीनें,
यामें गुन रतन जोति अपरंपार ।

वह घटत बढत ए बरस बरस सरस,
एक्कै कह्यो करतार ।। ४

लालहि लालके वरनत,
यह पटतर दयो न जाई।
सब ही हाथ वह विकात,
इनि हाथनि सबै विकाई।
माई और वह एक रंग ए अनेक रंग,
वह लघु इनिमै गरुताई।
वामे नेंक जोति ए जगमै जगमगात,
कहा लौं कहियें साहिजहां संसार साहिवकी अधिकाई ।। ५

राग भूपाली

आए मेरे लालु विरां वागे वनि ठनि,
नैन निजु अंग देष्यो रहत हीं लुभाई।
जौं लो पलक न लगत तौ लौं,
और और अंगनिकी सोभा देषी न जाइ।
माई मेरी तो यह गति,
निमिषके लगत मेरो ज्यौ अकुलाई।
कहि धौ री कैसे देषियें,
साहिजहां सुन्दरकों अघाई अघाइ ।। ६

प्यारे ज्यौं दर्पनमें प्रतिविंबु,
मुषकें मलिन भए मलिन होति हसेंतें हंसति।
त्योंही प्यारीकी प्रकृति,
तिहारी प्रकृतिसों नितहीं लसति।
यह अधिकाई यामैं झुकेते झुकति नाहीं,
मन रोसतें प्रतिबिंब कसति।

याहीते ऐसी तिय साहिजहां,
पिय तिहारे मन बसति । ७

प्यारीको मानु प्यारेके हाथ,
तामें प्रतिबिंबत प्यारो ।
दरपनमें तो समीप हीं मूरति देषियति,
पिय बिछुरेहूंते न होत न्यारो ।
वामे तो सदा न दृष्टि परति,
यामैं सदाके द्रिष्टि परतिकै सोऊ क्योन होइ ग्रंध्यारो ।
ताहीको भाग सुहाग ग्रनुराग,
धनि जाके हियें ऐसे वसें साहिजहां जगत उज्यारौ ।। ८

वीरा वागे वने ठने,
रतिपतिहूं ते ग्रति सोहें ।
दिनपतिकीं सी दीपति,
चितयोन जात सोहें ।
इनसे एही दूजो न सवैय्यो,
कहत करि सौहें ।
जाके ग्रागें मति गनपतिकी कहा,
संपति सुरपतिकी कहा ए साहिजहां पृथीपति सोहें ।। ९

राग मलार

जैंसे ए तिहारे कर ऐसे काहूं के कर न ।
इन्द्र बरषत वरषामें जल ए वरषत ए सदाई सुवरन ।
कलप मिटी कहां कलप तरते ए सबहीं कें दुष दारिद दरन ।
चिंतामनिते कौंनकी,
चिंता मनकी मिटति शाहिजहां जग पोषन भरन ।। १०

लालनके विछुरत रैंनि ग्रीषम,
दिन सीत पीत दिनमें रैंनि भ्रम ।
छिन दिन षरी महिना होत पहर एन वासर वरस सम ।

यह अचिरजु मिलन समे उलटि घटुतु वाही क्रम ।
सोई सुभ सम औज वही मिलें साहिजहां सुषदाई परम ॥ ११

प्यारे कैसे कहौं तुम मेरे प्राननिसौं तौं इतनौ हितु,
नाहीं मानती तातें तुम आन प्रान ।
आन ऐसी ज्यों कहिये इनमें भेदु,
नाहीं पाइयतु मेरे यहै ज्ञान ।
तातें मोहिं बताइए, कहा कहौं शाहिजहां महाजान ॥ १२

प्यारी लाजनि चितै न सकति,
प्यारेको घूंघट पट औ निहारति ।
उपनैन दिपै ज्यौं अहिक देषियतु,
जे चतुर तेयी उपमा विचारति ।
और चितन चितवत कर नैननि आगें,
धरिये त्यों अंचर मुष पर डारति ।
इहिं विधि शाहिजहां सुन्दरकी,
मुष छवि निरषि आपुहि वारति ॥ १३

दक्षिन नायकके लछनि जे कहियत,
ते सब तुमहें अरु ग्रंथनिमें जे गाई निकाई ।
कोउ छविसों छकाई,
कोउ औधि दे मनसनाई ।
कोऊ नैंन सैननि ललचाई,
कोउ वैंननिमें न रस सरसाई ।
शाहिजहां मन भावन सवनि,
परिभ्रवनको ए चतुराई कहा पाई ॥ १४

तन मन फूलत नर नारी,
तातें वसंतु वषानिये ।
प्रताप रवि ग्रीषम दान,
भरु लग्यो रहतु तातैं वरिषा मानियें ।

जस निरमल चंद सरद सीलत,
हेमंत अरि कंपत उर सिसिर ठानियें ।
विधी कीनै छ रितुवर समें,
साहिजहां पृथ्वी पतिके सदाई छहो रितु जानिये ।। १५

सब विधि सरस वरस गांठि,
विधिके वरसनिकी दीजैं ।
पंचास कोटि जोजन,
अचलाको अचल राज कीजे ।
ध्रुव धरनि चंद तरनिकी कहा,
लोमस मार्कंडेयकी आयु लीजै ।
संसार साहिब शाहिजहां पृथीपति
सुष समेत शंभु सम जीजै ।। १६

कंचन वरसकी वरस गांठि देत,
होत सुभ सगुन गन ।
उत्तिम गायन गावत नृत्तक नृत्त करत,
वादक वजावत तत वित्तत सुषिरघन ।
लाषनिके लाष लाष अभिलाष संपूरन होत,
नर नारी आनंदित तन मन ।
किरानसानी शाहिजहां छत्रपति,
तौं लौं चिरंजीउ रहो,
जौं लौ मेर चंद तरनि गगन पानी पवन ।। १७

इहि विधिकै बरसती वरस गांठि ही जै ।
विधिके दिनके छिन,
तिन छेयुहु रत तिनके दिन महीना लीजैं ।
तन मन आंनंदित नर नारी,
आसीरवाद देत सोई सुधा रसु पीजै ।
कंचन वरस सरस, शाहिजहां कोटि जुग जीजै ।। १८

इहि विधि शाहिजहां षेलत होली, होत अति रस रंग।
नवल वसंत नवल वनिता वनी, नवल लाल बने सब अंग।
गायन गावत नृत्तक नृत्तत, तन मन बढत अनंग।
बीन रबाव तार डफ, बहु विधि वाजत सरस मृदंग।
चोवा चंदन चन्द्र मृगमदकें, उठत सुवास तरंग अभंग।
साहिजहां चिरजीवें तो लौं जौ लौं जमुना गंग॥ १९

कनक महल मधि रितु वसंतमैं, षेलत शाहि इहि विधि की होरो।
वसन अमोल आभूषन पहिरैं, प्रौढा मुग्धा मध्या गौरी॥
उत्तिम गावति उत्तम नाचति, उत्तिम वांद बजावति।
राग रस नूप परसपर, निरषि सुष पावति॥
चित्र विचित्र भयो अति सोहत, भू नभ मध्य विसाल।
उपवनके प्रतिबिंब हरयो है, अरु गुलाल रंगु लाल॥
चंदन चन्द्र कचूर चूरसों, अरु अवीरसों सेत।
कृष्णागरके धूप धूमसौं स्याम वरन इहि हेत॥
छिति अंवरमें फैलि रही है अंवरकी अति वास।
तर ह्वै रहै अतरसों आंगन बाढत हिये हुलास॥
मृग मद आदि मिलाइ अरगजा ओर मची चोवाकी कीच।
नृत्तत विछलत पाइ नृत्तकनिकै रंग भूमिके बीच॥
वहु गुलाबसों घोरि के केसरि, रतन जटित कनक पिचकारिनि।
नवल लाल छवीलों छिरकात, रीझि रीझि वर नारिनि॥
अद्‌भुत षेल साहिजहांजूकें, को वरने कविराज।
जुग जुग रहो अचल अचला पर, आनंद सहित समाज॥ २०

औरनके गुन सर सरिता ज्यों,
तेरो गुन अपरंपार समुद्र समान।
जिती कोऊ करे अलापचारी विस्तारसों,
तातें सरस तेरी एक टीपकी तान।
तेरे गावत और गाइन ऐसें छिपते,
जैसे उडग उदै होत भान।

याहीतें रिझाई लीनै सुरज्ञान,
साहिजहांन सानी साहिब किरान ।। २१

आली री प्यारेकी चितवनिपै, होत चितवन पाऊं ।
इत उत वहराइ जब हीं चितकुं, तब चितवनिहींमैं आऊं ।
रूप रस चतुराई सागर, सब बिधि आगर कौंन कौंन गुन गाऊं ।
साहिजहां सुन्दर मोहित तन मन भावत,हौंऊं उनकों अति भाऊं ।।२२

तिहारी सुन्दरताकी उपमाकौ और नहीं,
तिहारोइ प्रतिबिंब लहत ।
अनत कहां प्रतिबिंबहूंमैं ऐसी छवि,
जो होइ यह जुगति गहत ।
मेरे जान काम प्रतिबिंब सी ह्वैहै,
जाते वाहि अनंग कहत ।
शाहिजहां छवीलै छविवर जीत्यौं,
वह यातें छप्यो रहत ।। २३

वषत वली ऐसे तषत वैठे जाहि लागे,
रतन करोरिके करोरि करोरि ।
सप्त द्वीप नव षंडनि ते जे मगाए आपु भुजवर,
अस जे राषे हे सब साहनि जोरि ।
जिनकी छवि आगे रवि दवि जाति,
रैनिमें द्वरि करत अंध्यारेनि मोरि मोरि ।
साहिनि मनि साहिजहां तापर अति हीं विराजत,
और कंचन वरसत झकोरि झकोरि ।। २४

मंगन कीनै दानि दानी महादानी कीनै,
जसु भयो पार समुद्र तरि ।
जाके आगे सुरतरकी सुरति काहि,
चिंतामनि चितमैं न आवति ताकी को कहि सके सरि ।

निसि दिन लगायो झरु है महा,
इन्द्रनीलपद्म राग पुष्पराग हरित मनि मोंतिनि करि ।
सुरपति वरषतु वरसातु वरषामें,
शाहिजहां नरपति वरषतु वरषो भरि ॥ २५

सर सरस वरस गांठि देत हीं,
लाषनिकी गांठि छोरि दीजियति है ।
राई किये राजा राजा महाराजा किये,
ऐसे रति लीजियति हैं ।
चौदह रतन कनक रजत राशि तुलामैं समता करति,
याते घर घरकी कीजियति है ।
साहिजहां महा दानि देत ऐसे आनंदित होत,
जैसे पावत सुष पावत सवै जगतकी असीसें सुधा पीजियति है । २६

सरस वरस गांठि देत लछ लछनिको,
लछनिकी गांठि छोरि लछ दीजियति है ।
कनक रजत रासि तुलामैं तुला करति,
ता षनहि यातें घर घर कीजियति है ।
शाहिजहां सुषदाई सदाई विराजो ऐसी,
वसुधाकी सुधासी असीसैं पीजियति है । २७

राग टोडी

अनत रति मानि प्रात आए प्यारे प्यारी आगे धरी आरसी ।
दछिन लछिन दुरावत पै कैसे दुरत छवि भई चारसी ।
तिय अपनो जानिवो प्रकट न जनायो यह रीति अमृत धारसी ।
याते रीझि रस वस भए शाहिजहां सुन्दर महारसी ॥ २८

प्यारी कीनो जब मानु तव प्यारे यह चतुराई कीनी ।
पाछे ते आरसी आगे करि दीनों ।
निरषत ही मानु छूटि गयो तन मन नेह रंग भीनी ।

साहिजहां नवल लाल इहि विधि रस
वसकै ललना कंठ लगाइ लीनी ।। २९

देसी

आलीरी काहेते तेरी थकित भई गति ।
सेद रोम हरषवानी भेद पंक अंगनि अति ।
औरे कांति अनिमिष नेननि चित्रकी उपमा लहति ।
ये जानी निरषेरी साहिजहां मोहन मूरति पति ।। ३०

राग मलार

साहिजहां जू को देषि थकित भई,
ये हे गति जोवनके भार मानो चलि न सकति है ।
अंग अंग सेद कन रोम रोम हरषी है,
वानी मांझ भयो भेद छाती धरकति है ।
औरें भांति औरे कांति अनिमिष नैननि सो,
चित्र हीकी उपमाकों लहिके जकति है ।
यह तो अधीरा प्रौढा धीरा मुग्धा जे नवोढा,
तिनहूंके ऐसे हाल काहें न तकति हैं ।। ३१

दिन षिनमें वीतत छिन दिनसे होत,
दरसन विन दरसन पियके ।
निसि दिन जो दरसन पावै, धनि सुहाग भाग तियके ।
अरु ए जब सुदृष्टि कै चितवत, तव सवै सुष होत जियके ।
साहिजहां सुषदाई सदाई चाहै जाहि,
ताके सपूरन मनोरथ हियके ।। ३२

कौन कहियत सप्त पदारथै कौन नौद्रव्यं,
कौन चौवीस गुन कौन पांच कर्म्मं ।
कौन सामान्य विशेष कौन समवाय कौन षट्भाव,

कौन चतुर अभाव कौन नौ आतमा पर्म ।
कौन त्रिविध काल कौन एकादसौ दिसा,
कौन सप्त रूप कौन कहिये रस द्विविध धर्म ।
इनके सब भेद जानत, साहिजहां महाजान संसार मर्म ॥ ३३

दोहा

साहिजहां तुम आदि गुरु, अति ही हे सुरज्ञान ।
प्यारी नीकी यौं लगे, जैसे नीकी तान ॥ ३४

[कवित्त]

सकल कला निधान महाजान साहिजहां,
मेरे जान तिय प्रतिबिंब सी लसति है ।
सुषके मलिन भए आपुन मलिन होति,
आनंदमैं आनंदत हसेंते हसति है ।
यह अधिकाई यामैं झुकें झुकति नाहीं,
करै मनुहारि मनु रोसते कसति है ।
ऐसी नाइकाके हियै नित ही वसत तुम,
तिहारे ऊ हिये तिय ऐसी ये वसति है ॥ ३५

सारी शाल लाल लाल मनि लाल मोती माल,
लाल ज़ाल हाल वाल षाल नित देत है ।
तोही दीवे काज ओर नायिकानि देत रहे,
तेरो नाउ लीवे हींके ओरनिको लेत है ।
तेरे गुन गन्यो चाहे ताते और नाइकाके,
गने गुन सुष शोभा बानुरी समेत हैं ।
मेरी आली मानु छांडि उठि चलि हिल मिल,
शाहिजहां महाजान सुन्दर सुचेत हैं ॥ ३६

लाल धन मोतीं माल, तोही दीवे काज और तियनि देत ।
तेरो ताऊं लीवे को और तिय को नाउं लेत ।

तेरो गुन गन्यो चोहे तो तें,
ओर तियनिके गुन गनत चतुराई समेत ।
यह सुनि समुझि मुसिक्याइ प्यारी कंठ लगाइ,
लीनी साहिजहां सुजान सुचेत ।। ३७
वासो वैसी मया करत है, अवलासों अव लागे ऐसी करन ।
तिहारे विछुरत सबै दुष आइ जुरत,
अब मिलि सुष दीजै कलि करन ।
दछिन नाइकके लछिन ऐसी ई गहे जु,
काहूसों करत नेन सेन काहूके लगत करन ।
जगत उज्यारे साहिजहां प्यारे,
प्यारीको ज्यों तिहारे करवाके करन ।। ३८
दल चढत धूरि पूरि रहति, चंद सो मंद रवि नाचत ।
मोर व्योम घटा जाति दुँदुभि धुनि गरज सुनि पपीहा बोलत,
यों कहत इन्द्र कवि तामें चंचल चौर वडा पांति ।
मानो कटि वर वरछी विजु छटा सी चमकत ।
रिपु रहत दवि चक्कवा बिछुरंत, रेनि जाति सत्रु मुंदत ।। ३९

साहिजहांजूके पयानकी छवि

प्यारी प्यारेको चितवति, घूंघट पट ओट दिये ।
लाजनि चितै न सकति अब, चितवति उपनैनकी उपमा लियें ।
दंपतिकी छवि कहांलौं वषानियें, वर हुलास हिये ।
साहिजहां सुन्दरकी सोभा ज्यों सरसति पल पल,
त्यौं त्यों रूप रस प्यासे नैन पियें ।। ४०

दोहा

इतें मानु पतिव्रतु धरैं, सुतिय पतिव्रता जानि ।
तिय प्रतिबिंब न चाहई, रूप दूसरो मानि ।। ४१
सुष सुन्दरता देषिके, विधिको भई जु भूल ।
फल ललनाके उर लगे, लालनके उर फूल ।। ४२

तर लता नरनारी तनमन फूलत रंग,
विरंग कीनो जगत वाग ।
रोर पत झार केउ सुष चोंप कौंप उलहत,
रसाल कवि मोरे हिये अनुराग ।
गायन कोइल जस पंचमे गावत मंगन मधुप,
कीरति सुवास मातें इहि फाग ।
साहिजहां पृथीपतिकौं सुभावै सदा वसंत,
धनि पृथीको सुहाग भाग ॥ ४३

साहिजहां प्रत्यच्छ काम मूरति काम परिछाहीं,
और न उपमान यह शबद प्रमान ।
उपाधि विनु व्यापति तिहारी ता ज्ञानते,
होत कहां प्रभुकी अनुमान ।
व्यधिकरन धर्माभाव, बषाने ताको बड़ो सयान ।
चारि अभावके जाने तापर रीझें, साहिजहां महाजान ॥ ४४

कंचन वरसकी वरस गांठि देत, होत सुभ सगुन ।
सुभ नषत वलीकों व्यास, साधि दीनी सुभ लगुन ।
सवै सब पावत मंगन भीर, ऐसी ज कोउ पावत सगुन ।
साहिजहां पृथीपति देत ऐसे सुष पावत, जेसे लेत सुष गुनी अगुन ॥ ४५

प्यारेको लषि प्यारी ऐसे हुलसति, ताहिको सवै वरनि ।
ज्यौं चंद देष कुमुदिनि, और कमलिनि जोहि तरनि ।
अरुष्यौं दुलहें ज्यों, कुमिलानी वेलि परे भरनि ।
तन मन अति आनंदित सोई जापर,
साहिजहाँ सुन्दरकी होइ ढरनि ॥ ४६

आली री निसि दिन प्यारेकी मूरति वसति जियमें ।
वाह रंगनिसों लिषीनु काम चित हेरे हियमें ।
और तिय औरनि दिषावनकों सवीह राषति वैसो न नेह पियमें ।
साहिजहां सुन्दर ऐसे जाके हिय वसें सो सराही तियमें ॥ ४७

माई री प्यारेकी सूरति मन मुकुरमें सदा निहारति ।
औरति सीस धरति औरके दिषाइवेको यहै विचारति ।
निसि दिनु जागत सोवन नेंकु न विसारति ।
साहिजहां मोहन मूरति पर हौं सवं सु वारति ॥ ४८

द्वितीय झूलना

सुभ नषत रचि रषत नृप लसत बषत वर,
तषत पर वैठि छवि सिंह छाजै ।
तेज दुति अक्क सम सक्क जिमि सक्क,
महि चक्कावति एक वहु चक्क गाजै ।
लंक पति वंककी रंक तिय संकतें,
अंक परजंक सुष छाडि भाजै ।
जीति नव षंड परचंड भुजदंड वर,
साहिजहां साहि वलि वंड राजै ॥ ४९

[कवित्त]

सुन्दर समत्थ मत्थ सिंदुरसों,
लत्थ पत्थ गहे रवि रत्थ मद वारि वरषे ।
ऐसे हे उतंग ए मतंग साहिजहांजूके अंगनि,
सुमेरहूंकें शृंगनिसों घरेषें ।
ऐरावतके से वेटे दिग्गज लगत चेटे,
दूरसों घुरेटे देषि रोम रोम हरषें ।
चरचो चक्क चंपै अरिचर डर कंपै,
वोह काज सिंधु रूपैले कलपत्तर करषैं ॥ ५०
दिन षिनसे वीतत षिनदिन से
होत दरसन विनु दरसन पियके ।
निसि दिन जो दरसन पावैं,
धनि सुहाग भाग ता तियकें ।

विनु निरषे पल कलप होत कलप रहित,
मिलिवेकी होत न सुष जियके ।
परसन चितह साहिजहां सुन्दरको दरसन,
पाय पूरन होत मनोरथ हियके ।। ५१
प्यारेको मेरो एकै मन एक्वै तन होत विरह दुष काहे ।
परसपर वैंन सेन ग्रालिंगन परसपर नैन चाहें ।
हो तो तन मन भेद न जानति रहरि ग्रभेद ग्रवगाहे ।
दछिन लछिनतें साहिजहां प्यारे प्यारीनि सौपे मनि वाहे ।। ५२

ग्ररसोंहैं नैन लाल लाल ग्ररु सोंहे क्यौं करत ।
ग्रौर पेच पागहें छोडे पेच पागहें,
हम ग्रान जे वनिता सो विहरत ।
साहिजहां पिय छ्वि मोहि भावति हौ,
ऊन्हे भावति पै तुम ग्रनत ढरत ।
ग्रानन चाहौ कछू पै ग्रानन चाहो हौं,
ग्रानन्दित जु इत ऐसे हूं पगु धरत ।। ५३

सुन्दर तन भूमि हियो क्यारी चितवति जल सींचि वाह वयो ।
उलही लहलही पेम वेलि तामें हू फूल फूल भयो ।
सो विरह तरनिसों कुमिलाति ग्रवलौं कछु न गयो ।
साहिजहां पिय सोई कीजे जाते होइ रंग रस नयो ।
सुगम नेह करिवो कठिन निवाहिवो सोई सके जो जाने रिस जीति ।
पेम मग डग धरि करिये सोई जातें दिन दिन वढ़े परतीति ।
तातें वित हित य्यों वढत य्यों पाछिले पहर परत छांह की रीति ।
यह जिय जानिये जासों भांवरि तासों,
साहिजहां ऐसिये करत प्रीति ।। ५४

मत्त संगीत लिये नृत्तक सब नृत्तत त्रिविध पंचंग ।
उडत गुलाल केसरि जल छिरकत ग्ररु फुलेल उतमंग ।

चोवा चन्दन चंद्र मृगमदके उत सुवास तरंग अभंग ।
मोहनकी छवि निरषि तियनके अंग अंग बढावत अनंग ।
सुष सवाद संपूरन तन मन साहिजहां सुन्दरके संग ।
यह राज समाज रहो थिरु तोलौं जौलौ जमुना गंग ।। ५५

इति श्रीसर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचितायां
कवीन्द्र-कल्पलतायां साहिजहां विषयक ध्रुवपदानि ।

अथ विष्णु पद

[सरसी छन्द]

मैं हू लियो वह मोहि कन्हैया, मोंहि रही हो मोही ।
देषि सुंदर तन थकित भई मति, सुधि नहीं हो कोही ॥ १

बाट घाट बीथी गृह आंगन, आनि अरैं सब ठाउ ।
अव लौं वची जैसे तैसे हौं, अब कहा करौं कित जाउं ॥ २

निरषि रूप मै चितै दियो उत, इतहि सषी सुसिक्यानी ।
ताहू गऐं तही दृग राषें, यह चतुराई ठानी ॥ ३

हिये हर्‍यो नेंक हेरत ही, तन मन गई विकाइ ।
पुलक भई भरैं दृग उपजे, ······आठों भाइ ॥ ४

आउ मोहि मिलि कहि मोहीसों, लेत और कौ नांउ ।
अधर कपोल मीडि अपने ही, परत आपने पांउ ॥ ५

तब मै रीझि सवारी विंदुली, यह मिस कर्‍यो प्रनामु ।
उनहूं समूझि सवार्‍यो तुररा, मार्‍यो कुररा कांमु ॥ ६

और निपट चतुराई हौं हूं, रही लुभाइ लुभाइ ।
मिलि न सक्ये या लोक लाजते, लीनी सरस सुभाइ ॥ ७

चितै कुचनि तन कमल कटी द्वै, छाती धरि धरि मसकै ।
मोहन गुपाल छइल्ल छवीलै, लई आपने वसके ॥ ८

फागुन मास आंब वहु वोरे, वन उपवन सब फूले ।
हम दोऊ मिलि एक मते मति, सुरति हिंडोरे झूले ॥ ९

जातिपांति कुल धरम गंवायो, प्रान पियारो पायो ।
कोऊ कछू कहोरी होरीमें, कियो काजु मनभायो ॥ १०

अथ तत्वज्ञान विषयानि भाषा पद्यानि

[कवित्त]

एक कहो पुरुष प्रकृति जग कारन है,
निर्गुन पुरुष एक जीव जु दोजा नहीं ।
पशुपति जग हेतु चेत नये जीव जुदो,
और और वासुदेव भगवंत मान हीं ।
ताते जीव संकर्षन मन परद्युम्न अहंकार,
अनिरुद्ध जीवजु दोके न जानहीं ।
एक कहै नित्य ज्ञान नित्य सुष नित्य इछा,
कृति जाके और चारि गुनकें विधान हीं ॥ १

सरवज्ञ जगतके उनमान न जान्यो जातु,
जीवते जुदो है प्रभु जीव कोनसा नहीं ।
आँन कहे आँन २ छन २ देही होत,
सरवज्ञताहीके हे निपट पषांनहीं ।
एसे एसे मत कहे हमतो न एको गहें,
निज वेद तत्वको कहत हैं निदानहीं ।
उपादान कारन निमित्त फुनि कारन हे,
जगको सु तारन तरन जिअं आंनहीं ॥ २

निराकार निरंजन केवल अनंद ज्ञान,
विभु अविनाशी प्रभु एक पहिचान हीं ।
जैसे लूतां तंतु प्रति उपादान निमित्त है,
एसे बूझि हियेके भरम भेद भान हीं ॥ ३

सांष्य मत कह्यो आदि पाछे पाशुपत मत,
पुनि पंचरात मत गुनिके गनायो है ।

ताके आगे जैन मत सोई है त्रिदंडिनिके,
आगे नागामत मीमांसक आयो है ।
ताके आगे पातंजल मतिवंत जानो,
मत वेदंत सिद्धंत मत अंतमें जनायो है ।। ४

[चौपाई]

रंग रंगकी गाइनि लेषौ, एक रंगपै दूधहिं देषौं ।
मत नाना विध तैसे जानौं, एक भांतिको अलषु वषानो ।
जव जव जो जो जह कह्यो, तब तब तह सो सो सह्यौ ।
करि इछाके पार न पावै, यह बात सुर नर मुनि गावै ।। ५

[सवैया]

भूमि न तोइ न तेज न वायु, नभो नमनो न कहे हम तोई ।
चित्त न बुद्धि अहं कृति नाहि, समूह मिला पुन आपुन होई ।
इनते उवर्‌यो विभु एक अषंड, महा सुष रूप सु केवल सोई ।
देषतु है सब हीं सब जानतु, ताहिन जानत देषतु कोई ।। ६

[कवित्त]

नेननिको नैन जोहै काननिको कान सोहे,
रसनाकी रसनो है सो कै वताइए ।
नासिकाकी नासिका हेतु चाहूकीं तुचा कहें,
मनहूको मन अनगन गुन गाइये ।
नैन कान रसनासों मनहूसो जान्यो नहो,
एसेंके कहतु ताहि कैसे कै जनाइये ।
धरमनि धोई बुद्धि ताहीमें समोई,
जब ऐसी बुद्धि होई तब सोई प्रभु पाइये ।। ७

[सवैया]

सिस्य गुरू न सिषावनि नाहि, न तें नहिमैं न यहो पुनि नाहीं ।
पार न वार न आदि न अंत, न मध्य फुरंत वहै सब घांहीं ।

न सुंन्न न पूरन एकु अनेकु न, केवल मिश्रित ए गति नाहीं ।
नाहीकी नाही फुवि नाहिन जामै, वसै जगु सो जगु मांहीं ।। ८

जागरु नाहिन सोवत है, न जिये न मरे सु विषेक विचारो ।
आवतु नाहि न जात कहूं न, सुषैन दुषैन सवार बिगारौं ।
जानि जनाइ विचार विवेकनि, आपु तरो अरु औरनि तारौ ।
बंधन नाहि न मोषु नहीं, यह आत्तम तत्व हि क्यों न संभारो ।। ९

विप्र न छत्रिय वैसु न सुद्द, व्रती न गृहस्थ वनस्थ पती है ।
ताके अचारन धारन, धर्म अधर्म न कर्म गती है ।
भोगु न जोगु न रोगु, अरोगुरु तमोगुन एको रती है ।
जारे जरे नहि सारे सरे नहि, जानतु कोइक शुद्ध मती है ।। १०

तातु न मातु न ज्ञाति न गोतु न है, उन लोकन वेद बतावै ।
तीरथ है न व्रती फुनि, नांहि सुषुप्ति दसा यह वात जनावै ।
अंतर बीज रहे सब रुषु यहै, उपमा कछु मो मन आवै ।
छाड़ि मिलापु रहे सबको, जब आपुनको तब आपुहि पावै ।। ११

लागनि सोचनि एको नहीं, न सुषुप्ति दसा न दिसा विदिसा है ।
लांबो नहीं चकरोउ नहीं है, न छोटो न मोटो न केसो कहां है ।
जाहि मुनीसुर जानत नांहि सु कैसे, कै ताहि गुनीसुर गाहै ।
जाने कछू न यहै हम जानत, एक वहै सब ही निरवाहै ।। १२

ऊरध है न अधो पुनि, मध्य न बाहर भीतर ज्यौं कहियें ।
पूरव पश्चिम उत्तर दच्छिन एकु न, लच्छिन क्यौं लहियें ।
न सेत न पीतहु रह्यो नहि, लालन स्याम सु नैननि क्यों गहियें ।
भेष अलेप हि पूछत हीं, यह ऊत रहै चुपु जो रहियें ।। १३

दोहा

ब्रह्म सहज जो सिद्ध तो, पहिली वने न बात ।
जो मानो दूजी जुगति, तो दूजो ठहरात ।। १४

[सवैया]

एक अनेकन संतन पूरन शुद्ध असुद्ध नीयों मन आने।
अंजन हैं न निरंजन हैं सषंड अषंड नहीं परिमानें।
ईस नहीं अनईस नहीं पुनि है ऊ नहीं न नहीं यह जानें।
एसे को जाहि वषानत है मुनि कैसे कै ताहि वनाइ वषानें।। १५

[चौपाई]

नाहीं है यह कैसे कहिये, हैहुंको तह ठौर न लहिये।
है नाहीं की नाहीं जहां, थकित भई मति मेरी तहां।। १६

[वीर छन्द]

आदि व्रह्म अनादि परम पुरुष अमूरति अरूप निरविकार।
अविगति अषंड व्यापक केवल परम जोति निरहंकार।
निरलेप निरगुन निरंजन निरालंव व्यापक निराधार।
परमेसुर परम गति महा प्रभु संपूरन परमानंद अपार।
······सोई सगुन सकति धरि करे विस्तार।। १७

[गीतिका]

धर्म मर्म सुकर्मके, जल कीजिये तन मंजना।
विषे रंगनि फटिक ज्यौं, मन नेंक हूं नहिं रंजना।। १८

क्षोभ लोभ विरोध क्रोधु, कुवोधु आदिहि भंजना।
दीप जोति दिषावई, इमि आपु जोति निरंजना।। १९

[कवित्त]

ज्ञान ध्यान उनमान गुरुके वचन वान,
जियें आंन उपमान एकु पहचानियें।
जागनि सपनि मेटि तुरीय लपेटि,
चितु तव जाइ तासौ नेंटि और लैन मानिये।

कहतु है निज वेदु रह नुनता सो भेदु,
यहु हैं गुपित्त भेदु मनमैं वषानिये ।
जान ह्वैके हूजे अनजान जग जाननकों,
तव जाइ महाजान जीकी जोति जानिये ।। २०

परिहरि विषे संग हरि रंग छाड़ि परि,
नर हरिरंग रंगु अंग अंग ठानिये ।
भर हरि भजे भय धरहरि वडी होति,
जरि जरि जात अघजोति पहिचानिये ।
डरि डरि जात दुष महा भवसागरको,
तरितरि जात तेई जिनि जिय आनिये ।
हरि हरि ठौरनितें मनिहींको हरि हरि,
हरि हरि वातनिको हरि हरि जानिये ।। २१

जोई जोई देषियतु जोई सु जोई सुनियतु,
तेई तेई देषी सुनीं सांचीकै वषानिये ।
यह सांचु वह झुठु वह सांचु यह झूंठु,
ऐसी वात कहे जोई ताही झूठो जानिये ।
जोपे सांच झूंठको विचार साचो चाहत तो,
सब सांच सब झूठ ऐसी मन आंनिए ।
झूठो सांचो जानो जगु सांचो झूठो आनो मत,
झूठो रूठो सांचो करतार मन मानिये ।। २२

तिलमें ज्यों तेलु रहे दूधमें ज्यों घीउ लहे,
ऊंषमें ज्यों षांड ऐसे आपु हरि आपुमैं ।
काठ हीमै आगि जिमि आग सेत ताई इमि,
मुनिनि वताई हरि जगत कलापमें ।
और हींको और जानि और हींमैं औरें मानि,
भ्रमहींते होत भय जेवरीके सांपमें ।

एक हींके जानिवेको एक हींके मानिवेको,
सब निस मेटि एक कीनो है मिलापमें ।। २३

जोग जज्ञ ज्ञान ध्यान जप धूमपान करै,
तीरथनि फिरै परै पालेमें गरत है ।
बड़े बड़े लोगनि अनेग कीने महा तप,
अजहूं अनेग तप अगनि जरत है ।
नाना सुष करैं किनि कोहेको सहत दुष,
काहे न पराए जन धनको हरत है ।
जो पै जलनिधिके तरंगसो अलेष जग,
काहेको निमाज रोजा तुरुक करत है ।। २४

[सवैया]

वावनके पद पावनको जन वावन लाष करे तपु केते ।
आपुहि आपु जनावनको सिर नावन लागत है नर तेते ।
वूझेहूं छांडत नाहिं सुभाइति आपुन आपुनको विसरेते ।
ज्ञान उजागर है निजके भव सागर नागर है उतरेते ।। २५

अंबरमें जिमि मेघ अडंवर अंबर आदिक त्यों जग जानो ।
ज्यौं उपजे मनते मनसा महदादि महातम तों मन आनो ।
एकते सौ सहसौ पुनि लाष करोरि करोरिनि ज्यौं जग मानो ।
हैं भयभंजन जो मन रंजन जोति निरंजन सो पहिचानो ।। २६

[कवित्त]

और और कहा कहें जगत वहे है ब्रह्म,
ताकी कांति भांति भांति जिय जानी चाहिये ।
धरमके मरम परम गति देनहार,
अपने जरम भरिकर मनि चाहिये ।
भानिके भरम भेद मानिके वचन वेद,
सब कैद मेटि मन सुष दुष दाहिये ।

मिटै जग नांउ रूप ताको नाउं रूप ताको,
ज्ञान हीके नैननिसौं क्यौं न ताको ताहिये ।। २७

[सवैया]

में हीं महीप गरीब मेंही अरु, मेंहीं अंदेवरु में हीं अंपाती ।
में हीं गुरू अरु में हीं सिष्य, सु मैं हीं अंतीरथ मैं जन जाती ।
मे हीं महींजल तेज प्रभंजन, मे हीं अकास दिसा दिन राती ।
में हिंऊं थावरु में हिंऊं जंगम, ज्ञान महामद मो मति माती ।। २८

[कवित्त]

एक कहे देषे आपु आपुको दिषावतु है,
जा देषतु है जासों ताहूं आपु कारि मान हीं ।
तीनों आपु एकु आपु है अनंत, एकु आप,
ऐसी जुगति कै आपु पहचान हीं ।
आपै आपु आपु ही आन होत आपु नहीं,
आन कहूं आन वहीं एक मति ठानी ही ।
आपुहीमें रहे आपु आपुहीको गहे आपु,
अैसी भांति आपुनते आपु न को जान हीं ।। २९

[सवैया]

दर्पनमें प्रतिबिंबित, आनन आननतें परि आनन होई ।
दर्पन आन सु आनन आन वने उपमान जु पै कहै जोई ।
विंव वहै प्रतिविंव वहै वह दर्पन है छवि देषतु सोई ।
भेदु नहीं निज वेदु कहै यह भेद विभेद हि जानन कोई ।। ३०

अलेष एक जानिये सु दूसरौ न मानिये ।
विचारि मूलि भानि ये न और बुद्धि ठानिये ।
कुबुद्धि डारि दीजिये विवेक बुद्धि भीजिये ।
जमाई एक कीजिये मय्याइ तत्त्व लीजिये ।। ३१

[सवैया]

रूप न रेषे विसेषन भेष अलेष, अशेष कहे हरि कोई ।
कैसे बने प्रतिबिंवु कहे, रस अद्भुत में अति मोमति मोई ।
ज्यौं यह अंबरको प्रतिबिंव लसे जलमैं, प्रभु कोइ मिजोई ।
जोई न सोई कहे रु सुने यह, जाहि भिदीजिय जानत सोई ।। ३२

[अवतारी]

न सूर है न चंद है, न राहु केतु मंद है ।
न बुद्ध है गुरु न है न सुस्ख है न दंद है ।। ३३
न औंर मध्य छोर है न गांउ नांउ ठौर हे ।
न जोर है न तोर है न कोवरो कठोर है ।। ३४
न सुंन्न भूमि आपु है, न वाइ भूरि ताप है ।
न पुन्न है न पाप है, न माइ पूत बाप है ।। ३५
न रेत है न षेत है, न देत है न लेत है ।
न जात है न गोत है, न पीत है न सेत है ।। ३६
हर्यो नहीं न गौर है, न लाल है न भौर है ।
न साहु है न चोर है, न और और और है ।। ३७
न पार है न बार है, न हीन मांझ धार है ।
अपार है न पार है, संसार को अधार है ।। ३८
न द्यौस है न राति है, न जाति है न पाति है ।
प्रमत्त है न माति है, न कांति है न भांति है ।। ३९
न सोइ है न जागि है, लषो अलेष सोइ है ।
न एक है न दोइ है, रह्यो सबैं समोइ है ।। ४०

[दोहा]

नैननि नैना देषिये, ज्यौं दरपन हैं योग ।
अैसे आपुहि आपुहीं, देषत जानी लोग ।। ४१

अंतर गतके नैनके, ए नैना उप नैन ।
नीके पिय-छवि देषियति, याहींतें चित चैन ।। ४२
जागत है ज्ञानी जहां, तहं सोवत सब कोइ ।
जहां जहां जागत रहे, सोइ रहे तह सोइ ।। ४३
सोइ रहा तस ज्ञान तहं, जागत जहां जहान ।
जागत जहां जहान तहं, सोइ रहत सज्ञान ।। ४४

[चौपाई]

ब्रह्म ज्ञान अनुभवकों पावै, मोह अविद्या पास न आवै ।
अंत कोल इक छिन जो होइ, ब्रह्म सरूप होत तव सोई ।। ४५

[दोहा]

माया मोह सबै नसै, ब्रह्म ज्ञान विचार ।
अंत काल जो छिन रहै, (तो) होइसु ब्रह्माकार ।। ४६

[चौपाई]

मोह अविद्या निकट न आवैं, ब्रह्म ज्ञान अनुभव जो पावै ।
अंत समै जो षिन भरि रहै, परब्रह्म पद आपुहि लहै ।। ४७

[दोहा]

माया मोह सबै नमै, ब्रह्मानुभव विलास,
अंत समै जो छिन रहै होइलु ब्रह्म प्रकाश ।। ४८
माया मोह रहै नहीं, ब्रह्म ज्ञान जब होइ ।
सो जो अंत समैं रहै, ब्रह्म निरंजन सोइ ।। ४९
मूढ अविद्या रैंनिमें, सोवत विना विवेक ।
ब्रह्म ज्ञान परकास दिन, जागत ज्ञानी एक ।। ५०
जह सौवत है जगत सब, तह जागत सज्ञान ।
जागत जगत जहां तहाँ, सोवत सदा सुंजान ।। ५१
ज्यौं सूरज परकासमै, उल्लू निरषत नांहि ।
यौं न ब्रह्म प्रकाशकों, मूढ लषें मन मांहि ।। ५२

ज्ञान भान परकाससों, मिटैं तिमिर अज्ञान ।
हियो कमल हुलसै तवै, एसे भये विहान ।। ५३

अज्ञानीको जागिवो, सपने कैसो जानि ।
ज्ञानीको तीनिहु दसा, एक तुरीया मानि ।। ५४

जाग्रत सपन सुषुप्तिमें, भ्रमत रहै अज्ञान ।
तीज्यौ छोड़ि तुरीयमैं, आदित सम सज्ञान ।। ५५

सोनो भूषन होत ज्यौं, फेरि भूषनै सोइ ।
त्यौंही ब्रह्मै होत सव, सवै ब्रह्म फिरि होइ ।। ५६

[सवैया]

औरनि औरनि ठौरनि ठौरनि, दौरति है मनसा सव घाही ।
कंचन संचनके परपंचन, रंचन चैन धरै मन माहीं ।
भाषत और करे कुछ और, सु राषत और कछू चित चाहीं ।
जानै सवै जिय मानै नहीं, कहि आवत है कहि आवत नाहीं ।। ५७

अध ऊरध मध्य सु वाहिर भीतर, ब्रह्म वहै विलसैं सव घांहीं ।
थावर जंगम जीउ जितै, सु कितैक गनै सव हैं परछांही ।
तेई दसा गहिये कहिये, जेही व्यास वसिष्ट मुनीनि सराहीं ।
नाहि तिहारि करौ मनुहारि, सु जामैं जगै जगु सोऊ गमाही ।। ५८

[कवित्त]

षगानसों लरिवेते, काटि सीस धरिवेते,
ती षेत पकरिवेते कीनी वांह ठाढी है ।
सवै विद्या पढिवेतें आगढके गढिवेते,
आसमान चढिवेते वामे कला वाढी है ।
नौहूं षंड फिरिवेते गिरिहूंते गिरिवेते,
हाथी वाघ भिरिवेतै औरो दूंट काढी है ।
समुदके तरिवेतें पालेमें गरिवेतें,
अगनिमैं जरिवेते ज्ञान गति गाढी है ।। ५९

[दोहा]

और औरके लिषित हैं, आपुहि लिषत न कोइ ।
यांहीतें वहि लिषत है, लिषत हि दूजी होइ ।। ६०

इतिश्रीसर्वविद्यानिधानकवीन्द्राचार्यसरस्वतीविरचितायां
कवीन्द्रकल्पलतायां तत्वज्ञानविषयकानि भाषापद्यानि ।

अथ दारासाहिके कवित्व

[कवित्त]

तरु लता नरनारी तनमन फूलत हैं,
लाल चित चोंप कोंप पतझार मानिये ।
ग्राम ग्राम बास मोले सु नजरि हींते होत,
अनुराग रंग्यो बाग जगु पहिचानिए ।
ज्ञानकी सुवास लेत ज्ञानी भोर मत्त होत,
जस गावें गायनते कोइल बषानियें ।
और साहिजादे दूरि पातसे उडे फिरत,
दारासाहि साहि वसत रितु जानियें ॥ १

परम नरम चित्त धरम मरम जानें,
सरम समुद्र है निकाई बोल नांहकी ।
और छत्रधारी छत्र छाह नं वचन पावैं,
तेरेई वचन छांह सबहीको छांहकी ।
सारी महि मंडलीमें कीरति पसारी भारी,
दारासाहि जोर जेव दिल्ली नरनाहकीं ।
आलम पनाहतें पनाह होत आलमको,
तोहीते पनाह होति आलम पनाहकी ॥ २

सौ है भुम्मि भरतार दारिदको हरतार,
दारासाह करतार अवतार मानिये ।
गुनि मन रंजन है भारी भय भंजन है,
प्रगट निरंजन हैं यों ही पहचानिये ।
वैरीके विहंडन है पुहमीके मंडन है,
दुष दोष षंडन है ऐसे कै वषानिये ।

दछिन दिसामैं देषो सूरज प्रताप छोजैं,
ताहू दिसि जाको तेज परतापु जानिये ।। ३

इन्द्र सम चन्द्र सम योगमें मछिन्द्र सम,
दिन इन्द्र उपइंद्र सिंह सम गूंजिये ।
भिषारीनि धूप करौ भुम्मि भार भुजा धरौ,
भारे भारे रिपु भूप भार मांझ भूंजियें ।
मेरी जीकी चाह यहै जगदीसजीकी सौंह,
लोमसकी आउ लेले दारासाहि तूं जिये ।
तो सो न भयो है पाछे आगे हूं रहे ह्वैहै,
और तुमसे हो तुम एक मेरे यह पूजिये ।। ४

यह हम कीनी टेक अनेक विवेक आनि,
नेक जाति एक तोही तन मन पूजिये ।
राइ राजा उमराइ षान षाना राना साहि,
और साहिजादे साहिं लागे सब मूजिये ।
सूर चन्द्र तेज जस जग जगमनि रह्यो,
कविन्द्रके कहे गुण कहा लगि कूजियें ।
भूतलमैं पोता पूत सवनि समेत सुषी,
तौलों जिये दारासाहि जो लौ यह धू जिये ।। ५

सूरति रावरी देषि देषि बावरी भई है मति,
और और मूरतिको मनते न छूजिये ।
एक ही है भाँति ऐसी एक हिये जानत हों,
एक हीं है कैसी बातें मेटी तुम दूजिये ।
आनंदनि उमहीं है देषियतु तुम हीं है,
तुमहींते आलम तुरक कहिये दूजिये ।
और और ठौरनिको राज कछू काज कौन,
दारासाहिजूके दर दरवांन हूंजिये ।। ६

सुन्दरता सागर है पूरताको आगर है,
नागर उजागर है दारासाहि सोहना ।
दीनको दयाल दोऊ दीनके दहत दुष,
दारिदके दावानल गुनी मनमोहना ।
लष लाष लाषनिको देदे अभिलाष पूरे,
कोरि कोरि कोरिनिको देत जाहि छोहना ।
सपूत सयाने सांचे सूरज ससीसे सोहें,
कैसेमें कवित्त कियें मेरी और जोहना ।। ७

[सवैया]

साहिब आलम दिल्लीको वालम, दाराशिकोह हरी दरसावें ।
असील सुसील रसीलो रसाल, विसाल सदा सुरसे सरसावें ।
वैरीकों बांधिकै वारिधि वोरत, वाजे निबार वधू तरसावै ।
मसके ससके धसके रिपु वै, जसके वसके वसुकों वरिसावे ।। ८

[कवित्त]

अरि उर साल देत जर जरी साल देत,
घोरे चारि साल देत हाथी देत मदके ।
राइ राजा उमराइ और साहिजादे साहि,
गुन सुर मुनीसुर जाके जात सदके ।
असीस सुधा सी पीजै लोमसकी आउ जीजै,
वैरिनिके सीस लीजै देदे सैलगदके ।
साहिनके साहि गाजी महंमद दारासाहि,
कहालौ बषानै जस तो वली अहदके ।। ९

अंगनिमैं जैसे नैन, वैनिनमै वेद वैन,
ज्ञाननिमै ब्रह्म ज्ञान, उत्तम वषानियें ।
तरुनिमैं सुर तर तरनि ज्यौं ग्रहनमें,
मनिनिमै चिंतामनि जैसे महा मानियें ।

सरनिमैं मानसर ह्रुदनमें नीर निधि,
गिरिनमैं मेर गिरि उर मांउ आनिये ।
देवनिमें महादेव काहू अवतारनिमैं,
साहिनिमै तैसे साहि दारसाहि जानियें ॥ १०

कंचन वर संकी सरस वरस,
गांठि देत होन सुभ सगुन ।
सुभ नषत, वषत वलीको,
व्यास दीनी साधि सुभ लगुन ।
देत सुष पावत ऐसे जैसे,
लेत सुष पावत संवगुनी अगुन ।
सोई साहिव दारा शिकोह,
सगुन ह्वै प्रगट भयो जु है व्रह्म निरगुन ॥ ११

कौन कहियत सप्त पदारथ कोन नव द्रव्य,
कौन चौवीस गुन कौन पांच कर्म ।
कोन सामान्य विसेष कौन समवाय कौन,
कोन चतुर अभाव कोन आतम पर्मं ।
कौने त्रिविध काल कौन एकादस दिसा,
कौने सप्तरूप कौन कहिये रस द्विविध धर्मं ।
इनके सब भेद जानत,
साहिब दारा शिकोह संसार वर्मं ॥ १२

आली री दंपतिके तन द्वै, मन एकै जानियें ।
जैसे नैन द्वै देषिवो, अरु सुनिवो एक वषानिये ।
ज्यौ दरपनमें बिंब प्रतिबिंब कै,
द्वै देहपै ज्यों एक मानियें ।
दारासाहि प्यारेसो प्यारीकी प्रक्रुति,
ऐसी मिली जु न्यारी न पहिचानियें ॥ १३

जानी है कृपानी कित्ति तीन्यौ लोकमैं वषानी,
अधिकानी रहो आउ दारासाहि सुवकी ।
जौ लौं हरि रानी रुद्ररानी रहै तौं लौं रहो,
देह ठहरानी सिपह सिकोहा जुवकी ।
जौ लौ संभु जोग घ्यानी, जौ लौं वलि व्यास ज्ञानी,
जौ लौ हनुमान मानी जौ लौं भांति भुवकी ।
जौ लौं विद्या वेदवानी जौ लौं मेर गंगा वानी,
जौ लौं सिंधुपानी राजधानी जौं लौं ध्रुवकी ।। १४

लागत पतंगसे मतंग और जिनि आगे,
मेरते उतंग मद निर्झर झरत हैं ।
सिंचत हैं अंग नभ गंगके तरंग जल,
संगर अभंग घन रंगको धरत हैं ।
तोरि डारै डारैं सुरतरकी प्रसंग षेल,
पग करै सुरगजे कौतिक करत है ।
अंगमें न वंगमें कलिंगमें न ऐसे गज,
जैसे गज दारासाहिजूके विहरत हैं ।। १५

सूरज ससंक सुधा समर सुरेश सुर,
जौं लगि रसाके सातो सागर फेर है ।
संभु सिवा सुरसरी सुरग सलिल सिंभु,
समीर सुयंभु सैल वरुन कुवेर है ।
व्यास बलि विभीषन हनुमान अश्वत्थामा,
कृप और परसराम सेस सीस मेर है ।
तौलौं जिये महँमद दारासाहि जौलौं,
ऋषि लोमस औ मारकंड औ भुसुंड सेर है ।। १६

पेसकस देहैं देस देसके नरेस सब,
ठौर ठौर जाइ चतुरंग जब गाजि है ।

भाई छोडि भामा छोडि भूषन भुवन छोडि,
भभरि भभरि भूप भारे भारे भाजि है।
औरनि कहा कहै कवीन्द्र इन्द्र से सब,
नरन तज को सुरेस गुरु लाजि हैं।
राजी है जगत तोसों दारासाहि महागाजी,
आजु कालिका जो मेरे चहू चकवाजि है॥ १७

अदंडीनि दंडन हो बैरीके विहंडन हो,
दारासाहि मंडन जगत जस छाए हैं।
तेज मारतंड महि मंडलके आषंडल,
परचंड भुजदंड गुनी गुन गाए हैं।
षंड षंड कीने षंड षंडनिके षल झुंड,
रुंड मुंड झुंड षेंचि षेचरनि षाए हैं।
सुंडीनिके सुंडनिसों शोन भरे कुंडनिसौं,
भारी भकु रुंडनिसौं भैरव अघाए हैं॥ १८

मद्दंझर झरत जे वैरिनिके गज झुंड,
सिंहकेसी झपटते झुकि झुकि झोरे हैं।
कहूं रुंड कहूं भकरुंड मुंड,
दारासाहि महावली ऐसे मारि मोरे हैं।
तुरत हीं तहीं तहीं तनक तनकही सौं,
अरिनके सिर तरवारिनसों तोरे हैं।
जरते उषारे षारे पानीमें पषारे बाजें,
बाजे वैरी बोरिबोर वाजे वारि बोरे हैं॥ १९

[द्वितीय झूलना]

गरम प्रताप रवि नरम चित कहत कवि,
वरस संसारके भरम भानै।
सरस सिंधु रहै करम जगदीसको,
धरमके मरम सव परम जानैं।

भुम्मि भरतार यह विष्णु अवतार है,
आपु करतार मत सत्य मानैं ।
ज्ञान धारा धरे साहिदारा नृपति,
नित्त नारायणहि चित्त आनै ।। २०

[कवित्त]

सातों पारावार पय पारा ज्यौं डुलाए डुले,
गारा होत नाग लोक धमक नगाराकें ।
धराधर धसि जात धरनी धसमसाति,
अंग अंग कंप होति ध्रुवहूसे ताराके ।
हय षुरथारनिसों छार उठी आंवरमें,
सोउ मिटी वरसत गज मद धाराके ।
सेस सीस नए औ करक परी कूरमके,
कोलहूंके कूले टूटैं चढें साहिदाराके ।। २१

सुधाहूंते मुद्ध बुद्धि आठों सिद्धि नवों निद्धि,
अधरनीको अधरम नस्यो अरु नसेगो ।
ध्रुवते अधिक धीर धरम धुरंधर हो,
अषंड प्रताप तेरो षंड षंड लसेगो ।
धौसाकी धुकारहीकी धुनिको धमकहींते,
सोनेहूंको धराधर धुकि धुकि धसेंगो ।
साहिनिके साहि महामद दारासाहि तोसौं,
वैरि वांधि वसुधामैं कोउ नांहि वसेगो ।। २२

गाढे गढ भंजन है घनगर्व गंजन है,
अंजन से कारे हैं डरारे धराधरसें ।
भूरि धूरि धुधुरहैसे डरसों वंधु रहैं,
मानो सुर सिंधुरके वंधु रहैं सरसें ।
बलको न पारावार पारावार पारगा हैं,
सुंडनिसौं तोरे तारा तारापति तरसें ।

मदके वहे पनारा याते भरें नदी नारा,
दीरघ दुरद दारासाहिजूको दरसैं ॥ २३

प्रलैकालकै से धूमे भूमैं करें धामधूमें,
सदा मतवारै भूमैं, चूमैं चन्द्रमंडलैं ।
भारे भारे भूधरनि धक्कानि धसाइ डारैं,
फौजनि विडारे ड़रपावत अषंडलै ।
धौसि धराकैरैं घारा रिपुकैं न रहै गारा,
बाजत नगारा भौंर सबै वास गंडलैं ।
दारासाहिजूके सूंडि पुंडरीक सुंडादंड,
वरिवंड वैरिनिके करत प्रचंडलैं ॥ २४

सार करि वार कर गहतहीं करवार,
अरि परिवार डोलैं अनुसार पाराकें ।
धावें सिंधुनात धूरिधाम निधि धुंधुरित,
धरनी धसमसाति धमक नगाराकें ।
दिग्गजनिगस पब्बय पिसान षब्ब,
कीच मचै चुवत दुरद्द मद्द दाराकें ।
विद्दलत सेसदल वद्दल अरिद्दमत,
छंडत समुद्द हद्द, चढे साहिदाराकें ॥ २५

[दोहा]

दारा नादिर ग्यों वनें, जैसे सीतारामु ।
कीरति मूरति मति सुमति, परमानंदके धाम ॥ २६

[द्वितीय झूलना]

षलक मह सोर है झलक सब ठौर है,
पलकमैं षलककी विपति भानैं ।
सुजसु घनसार सम दुःष हरता रहैं,
धर्म अवतार सनमर्म जानें ।

धनद नवनिद्धिको हर सकल सिद्धिको,
विनुध गुरु बुद्धिको सो न मानै ।
वहु आजान हैं भांति आजानकी,
तो महाजानकीको वषानै ।। २७

इति श्रीसर्व विद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचितियां कल्पलतायां दारासाहि विषयक ध्रुपदं दोहा कवित्वानि ।

अथ वंगसाहिबके कवित्व

[कवित्त]

दारिद विडारति हैं धन कोरि डारति हैं,
परम धरम षानि कित्ति जसु लेति हैं।
सबकीं असीस लेति वैरिनिके सीस लेति,
ईसकी सी वकसीस दिन दिन देत हैं।
जानति है नीकी भांति जगदीसजीकी कांति,
चार्‌यों वेद जाहि गावें कहें नेति नेति हैं।
साहिब वेगमजूकी साहिवी अचल रहो,
तातहि समेत भ्रात प्रीतिहि समेत हैं ॥ १

अथ नानास्तुति विषयक प्रास्ताविक कवित्वानि

[कवित्त]

दान परवाहमें वहावे दुष दारिदको,
प्रभु परवाह राषें गढ्ढें राहसराको ।
काम कोनु कामु सव कामको है कामतरु,
वैरिनिके सीस देत तरवारि जराकौ ।
सीसके दाजार जेतो भुम्मि भार धरे सेस,
तेतों एकी सीसहीते धरैं भार धराको ।।
आलमकी है हयाति साहिजहां पातिसाह,
ताहूके हयाति हैं हयातिषां सुघराकों ।। १

सैय्यदषानकी वहादुरी वषानैं कोन,
तीन लोक वसुधामैं जाकी कीत्ति गाई है ।
सो भाई है आलमकी सोभा इहै भांति जाकी,
जाकों जो भाई वडेनिको सो भाई है ।
साहसी सयानो सांचो सूरिवां सर महा,
सीलवंत सुंदर सपूत सुषदाई है ।
साहिजहां साहिजूकी साहिवीको भार धरें,
सिपहसालार सोहें साहिकी दुहाई है ।। २

अथ पुनः दारासाहि कवित्त

आपनु है गुरु तुल्य चेला सो जगत सोहै,
वारिधिके वेला पार कीरति जगति है ।
साहिजहां साहिजूको साहिब दारासिकोह,
जाकी मति अति नव रसनि पगति है ।
जाको जस रेला फैलि षेला करै तीन्यो लोक,
जाकी देन दिग्ध दुष दारिदकी गति है ।
जाके नहि वे लानत वेला न अधेला है,
ताहीको नु रीप निकेत न वेला न लगति है ।। १

वातनिके पावनको नामके रमावनको,
सुपथ थपांवनको सुमतिको घरसौं ।
प्रभुगुन गावनकों जसके जगावनकों,
दारिद भगावनको मोजनिको हरसों ।
मूढ समुझावनको गुनीके रिझावनकों,
साहिब दारासिकोह दूजो कामतरसों ।
वैरी तरसावनकों प्रीति सरसावनकों,
सोनो वरिसावनकों सावनको डरसों ।। २

अथ मिरजामुराद कामके कवित्त

कामरीकै मांगे वकसीस करै पामरीके,
हय मांगे हाथी देत हीरा देत हंसीमें ।
राजा राय उमराव साहिजादे साहिजहां,
और और साहिजाहि गने महाजसीमैं ।
मिरजा मुरादजीको मिरजा मुरादि कामु,
देह धरें मानो काम देष्यौं अतिरसीमैं ।
वित्ति परताप छवि जगमगै ऐसी भांति,
जैसी छवि देषियति भान अरु ससीमैं ।। १

परम नरम चित्त धरम मरम जानैं,
सरम समुद्द रज धीरजुको धामु है ।
दामु दिन दीवै काजु दामु है लग्यो रहतु,
नामु है न नीर्‌यो आवै औसो नेकु नामु हैं ।
हरि हरि वातनिको हरि हरि घातनिकौ,
जहां परै कामुसाहि जहां ताके तामु है ।
कामु है प्रकट पै दिषावै आइ कामु है,
मेरे जाननि रजा मुरादि काम कामु है ।। २

अथ प्रस्ताविकानेक कवित्व ध्रुपदानि

पागे प्रेम अनुरागें साहिजहां रैनि जागें,
मरगजे वागे नित ऐसे विहरत हो ।
आननहीं चाहे कछू आन नहीं चाह्यो वाहो,
मेरो तो सुहाग इत ऐसे ही ढरत हौ ।
भांवरिकी वनिताके वसत हो मोहि तेहु,
मोहिते तऊन छिन एक न टरतहो ।
नैना अरु सोंहे लालु सौहें क्यौंन कीजियत,
रग रूप सोंहे सोंहै सोंहें क्यों करत हो ।। १

अरुसौहैं नैन लाल, अरु सोंहै क्यौं करत ।
पेम पागें अनुरागे रैनि जागे,
मरगजे वागे नित ऐसे विहरत ।
आननहीं चाहों कछू आननहीं चाहौं,
मेरो तो सुहाग भाग इत्य ऐसेहूं ढरत ।
भांवरि कीजु वनिता वनिता के वसति साहिजहां,
मनमोहन तऊ मोहियेते छिन एकै न टरत ।। २

।। शुभमस्तु ।।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ— १. प्रमाणमञ्जरी-तार्किक चूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६'००। २. यन्त्रराज रचना-महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १'७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्-स्व० श्री मधुसूदन ओझा मूल्य १०'७५। ४. तर्कसंग्रह-पं० क्षमाकल्याण मूल्य ३'००। ५. कारकसंबंधोद्योत-पं० रभसनन्दि मूल्य १'७५। ६. वृत्तिदीपिका-पं० मौनिकृष्ण मूल्य २'००। ७. शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २'००। ८. कृष्णगीति-कवि सोमनाथ मूल्य १'७५। ९ शृङ्गारहारावलि-हर्ष कवि मूल्य २'७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्यं-पं० लक्ष्मीधर भट्ट मूल्य ३'५०। ११. राजविनोद- कवि उदयराज मू० २'२५। १२. नृत्तसंग्रह मूल्य १'७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग-महाराणा कुंभा मूल्य ३'७५। १४. उक्तिरत्नाकर-पं० साधुसुन्दर गणि मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पांजलि-पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४'२५। १६. कर्णकुतूहलं तथा कृष्णलीलामृतं-भोलानाथ मूल्य १'५०। १७. ईश्वर विलास महाकाव्य, श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ -१. कान्हडदे प्रबन्ध-कवि पद्मनाभ मूल्य १२'२५। २. क्यामखांरासा-कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा-गोपालदान मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात-महाकवि वांकीदास मू० ५'५०। ५. राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग १, मूल्य २'२५। ६. जुगल-विलास-कवि पीथल मूल्य १.७५। ७. कवीन्द्रकल्पलता-कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ—१. त्रिपुरा भारती लघुस्तव-लघुपंडित। २ शकुनप्रदीप-लावण्य शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा-ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण-ठक्कुर संग्रामसिंह। ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा, पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाश संकेत-भट्ट सोमेश्वर। ७. वसन्तविलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. रत्नकोश। ११. चान्द्रव्याकरण। १२. स्वयंभू छंद-स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद-कवि रघुनाथ। १४. मुग्धावबोध आदि औक्तिक संग्रह। १५. कविकौस्तुभ-पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्-पं० दुर्गाप्रसाद। १७. पद्यमुक्तावली-कवि कृष्ण भट्ट। १८. रसदीर्घिका-विद्याराम भट्ट।

राजस्थानी और हिन्दी भाषाग्रन्थ--१. मुंहता नैणसीरी ख्यात-मुंहता नैणसी। २. गोराबादल पदमिणी चऊपई-कवि हेमरतन। ३. राठोड़ वंशरी विगत आदि वार्ताएँ। ४. सुजान संवत-कवि उदयराम। ५. चन्द्रवंशावली-कवि मोतीराम। ६. राजस्थानी दूहा संग्रह। ७. वीरवांण-ढाढी बादर।

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषा में रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।
